प्रथम प्रश्न–पत्र
खण्ड (अ)
इकाई - 4

An Institute for MPPSC Examination

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
❖ मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन	03 – 08
❖ भारतीय सांस्कृतिक विरासत:प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न कला प्रारूपों, साहित्य,पर्व (उत्सव) एवं वास्तुकला के प्रमुख पक्ष	09 – 25
❖ मध्य प्रदेश में विश्व धरोहर स्थल	26- 29

An Institute for MPPSC Examination

मध्यप्रदेश म स्वतंत्रता आन्दोलन

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

1. शहीद गुलाब सिंह

- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन का महाकौशल क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने वाले वीर क्रांतिकारी
- 14 अगस्त 1942 में जबलपुर में जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस लाठीचार्ज में शहीद हुए

2. टंट्या भील

- 1857 की क्रांति के प्रसिद्ध आदिवासी नायक।
- जन्म 1842 में ब्रिरीगाँव (पश्चिमी निमाड़)
- भीलों के राबिनहुड के उपनाम से प्रसिद्ध।
- गुरिल्ल युद्ध पद्वति के जरिये अंग्रेजों से सतत् संघर्ष दिशा।

3. भीमा नायक

- निमाड़ अंचल में 1857 की क्रांति के नेतृत्वकर्ता।
- जन्म–1840 में पंचमोहली गाँव (बड़वानी)
- पानसेमल डकैतीकांड तथा अंबापानी युद्ध में अंग्रेजों से संघर्ष किया।
- उपनाम निमाड़ का रॉबिनहुड़

4. ख्वाजा नायक

- भीमा नायक के साले तथा साले तथा 1857 में निमाड़ क्षेत्र में क्रांति के नेतृत्वकर्ता।
- जन्म 1830 में सांगली गाँव (बड़वानी)
- पानसेमल डकैती कांड तथा अंबापानी युद्ध में भागीदारी

5. सआदत खाँ

- राजा होल्कर की सेना के एक विश्वासपात्र व बहादुर सिपाही
- 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान
- मालवा में विद्रोह का नेतृत्व कर अंग्रेजों को कड़ी चुनौति दी

6. रानी अवंतिबाई

- रामगढ़ रियासत (मंडला–डिंडोरी) की रानी
- 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
- देबहारगढ़ के युद्ध (18–20 मार्च 1858) में अंग्रेजों को चुनौति देते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।

7. जंगल सत्याग्रह

- वन अधिनियमों के विरोध में प्रदेश के विभिन्न भागों में मुख्यत: आदिवासियों द्वारा वर्ष 1930 में हुआ आन्दोलन।
- बैतूल (घोड़ाडोंगरी) तथा सिवनी (तूरिया) मुख्य क्षेत्र
- गंजनसिंह कोरकू ने नेतृत्व प्रदान किया।

8. झण्डा सत्याग्रह

- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1923 में जबलपुर नगरपालिका पर तिरंगा फहराने को लेकर हुआ ब्रिटिश विरोधी सत्याग्रह
- नेतृत्वकर्ता– देवदास गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, रामगोपालाचार्य

9. राफा सत्याग्रह

- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान सितंबर 1942 में इंदौर मेहुआ सत्याग्रह
- प्रजा मण्डल द्वारा समर्थन दिया गया।

10. म.प्र. का जिलयाँवाला बाग

- छतरपुर जिले के चरणपादुका गांव में 14 जनवरी 1931 को मकर सक्रांति के दिन क्रांतिकारियो की सभा पर ब्रिटिश पुलिस द्वारा गोलियां चलाई गई।
- बिना पूर्व चेतावनी इस गोलीकांड में अनेक क्रांतिकारी शहीद हुए।

11. त्रिपुरी सम्मेलन

- वर्ष 1939 में जबलपुर के समीप त्रिपुरी में कांग्रेस का अधिवेशन
- सुभाष चन्द्र बोस अध्यक्ष चुने गये।

12. मोहम्मद बरकतुल्ला (1854-1927)

- भोपाल के मोहम्मद बरकतुल्ला एक ब्रिटिश विरोधी, क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता समर्थक
- गदर पार्टी के संस्थापको में से एक
- काबुल में 1915 में प्रवासी भारतीय अंतरिम सरकार की स्थापना की

13. राजा शंकर शाह

- रानी दुर्गावती के वंशज, गठा मंडला के अंतिम राजा
- महाकौशल क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहूति दी

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

14. रानी अंवतीबाई का संक्षिप्त परिचय देते हुए 1857 की क्रांति में उनकी भूमिका बताइये?

उत्तर रानी अंवतीबाई

- 1857 की क्रांति में रामगढ़ रियासत (मंडला–डंडोरी) की रानी अंवतीबाई ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- पति विक्रमजीत की मृत्यु के बाद अपने दो अवयस्क पुत्रों की संरक्षिका के रुप में अंवतीबाई ने रामगढ़ की प्रशासन संभाला तथा अंग्रेज सरकार से अनेक मामलों में संघर्ष किया।
- अंग्रेजों के साथ हुए खैरी के युद्ध (नवंबर 1857) में अंवतीबाई ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया तथा मंडला सहित पूरे रामगढ़ को स्वतंत्र कराया, जिस पर ब्रिटिश सेना का कब्जा हो गया था।
- मार्च 1858 में देवहारगढ़ के युद्ध में अंत तक अंग्रेजों का मुकाबला किया परन्तु घायल होने पर आत्मसम्मान के लिए अपनी अंगरक्षिका गिरधारी बाई की कटार से अपना जीवन समाप्त कर लिया।
- अंवतीबाई का यह बलिदान भविष्य में मुक्ति आंदोलन को प्रेरित करता रहा।

15. कुँवर चैन सिंह के बारे में आप क्या जानते है? संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर कुँवर चैन सिंह

- मध्यप्रदेश का प्रथम शहीद का दर्जा प्राप्त कुंवर चैनसिंह नरसिंहपुर रियासत के राजा थे, जिन्होंने प्रदेश के स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी अलग पहचान बनाई।
- सीहोर सैनिक छावनी के पॉलिटिकल ऐजेन्ट मैडाक से कुंवर चैनसिंह की अनेक मामलों पर झड़प हुई, परन्तु उन्होंने न सिर्फ अंग्रे हुकूमत को मानने से इंकार किया बल्कि अनेक मोर्चो पर अंग्रेजों का विरोध किया।
- मैडाक द्वारा अनेक अपमानजनक शर्ते थोपने पर चैनसिंह द्वारा न सिर्फ शर्तो को मानने से इंकार किया बल्कि अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष प्रारंभ किया।
- 24 जून 1824 को वर्तमान सीहोर जिलें में तहसील चौराहे पर चैनसिंह व अंग्रेजो के मध्य हुए संघर्ष में वीरतापूर्वक सामना करने के पश्चात् चैनसिंह वीरगति को प्राप्त हुए।

- चैनसिंह के इस बलिदान ने भविष्य में स्वतंत्रता आन्दोलन को प्रेरित किया तथा उन्हे प्रदेश के प्रथम शहीद का दर्जा भी दिलाया।

16. म.प्र के स्वतंत्रता आन्दोलन में सेठ गोविन्ददास के योगदान/उपलब्धियों का वर्णन कीजिए?

- सेठ गोविन्ददास (1896-1974) मध्यप्रदेश के एक वीर स्वतंत्रता सेनानी तथा साहित्यकार थे।
- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे अनेको बार जेल गये तथा जुर्माना भुगता।
- उन्होनें 1920 में महाकौशल क्षेत्र के प्रतिनिधि के रुप में न सिर्फ सक्रीय भूमिका निभाई बल्कि 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भी सक्रीय रहे।
- रानी दुर्गावती स्मारक पर आमसभा में नगर कानून के विरोध में सेठ गोविन्ददास का भाषण ओजस्वपूर्ण रहा था जिस कारण उन्हें जेल की यात्रा भी करनी पड़ी।
- सेठ गोविन्ददास स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ—साथ उच्च कोटि के साहित्यकार भी थे, उन्होंने अनेक नाटक, एकांकी, उपन्यास जीवनी तथा निबंध लिखे।
- चम्पावत नामक लघु उपन्यास जहाँ उन्होंने मात्र 12 वर्ष की उम्र मे लिखा वही चार मुख्य नाटक दमोह जेल की यात्रा के दौरान लिखे।
- उक्त विवरण सेठ गोविन्ददास के स्वतंत्रता सेनानी तथा उच्च कोटि के साहित्यकार होने का परिचय देता है।

17. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में चन्द्रशेखर आजाद के योगदान पर चर्चा कीजिए?

- भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अमिट छाप छोड़ने वाले चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्यप्रदेश के अलीराजपुर में हुआ।
- 17 वर्ष की आयु में वे गांधीजी के आन्दोलन में शामिल हुए तथा जेल भी गये।
- आाजाद के विचार क्रांतिकारी थे जिस कारण वह शीघ्र ''हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन'' के सदस्य बने तथा रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी रेल घटना को अंजाम दिया, व भगतसिंह राजगुरु व सुखदेव की सहायता से सांडर्स की हत्या में भूमिका निभाई।
- क्रांतिकारी विचारों के समर्थक चन्द्रशेखर आजाद ने अनेक क्षेत्रों में अपनी वीरता का परिचय देते हुए ब्रिटिश शासन के छक्के छुड़ाए, परन्तु 27 फरवरी 1931 को अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में पुलिस द्वारा घेरे जाने पर अपनी पिस्तोल से खुद को गोली मारकर देश के लिए शहीद हो गये।

An Institute for MPPSC Examination

18. सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में तात्याटोपे के योगदान पर चर्चा कीजिए।

- 1857 के स्वतंत्रता संग्रमा में तात्याटोपे की भूमिका एक महान सेनानायक की थी।
- वह छापामार युद्ध शैली में माहिर तथा बेजोड़ सेनापति थे।
- ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध तात्याटोपे ने नानासाहब तथा लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर अनेक क्षेत्रों में अंग्रेज सरकार से लोहा लिया।
- लक्ष्मीबाई की मृत्यु के बाद भी 10 माह तक तात्याटोपे को पकड़ा गया तथा 18 अप्रैल 1859 को शिवपुरी में उन्हें फांसी दी गई।
- तात्याटोपे के इस बलिदान ने भविष्य में क्रांतिकारियों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

19. सआदत खॉन पर टिप्पणी कीजिए।

- सआदत खान इंदौर के होल्कर महाराजा के एक विश्वास पात्र तथा वीर सिपाही थे जिनका 1857 ई. की क्रांति में अभूतपूर्व योगदान रहा।
- सआदत खाँ में 1857 की क्रांति में मालवा क्षेत्र का नेतृत्व किया। तथा अनेक मोर्चो पर अपनी सैन्य टुकड़ी सहित अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया।
- 1 जुलाई 1857 को सआदत खाँ ने कर्नल ड्यूरेन्ड की रेसीडेन्सी पर विरोध स्वरुप हमला किया।
- कई घंटों चली मुठभेड में इंदौर को अंग्रेजों से आजाद कराया। कई सालो तक क्रांति की मशाल जलाने वाले सआदत खाँ को मुखबिर की निशानी पर बांसवाड़ा से गिरफ्तार कर इंदौर लाया गया।
- जहाँ 1 अक्टूबर 1874 की सुबह आजादी के इस महान क्रांतिकारी को फांसी पर लटकाया गया।

- स्वतंत्रता के इतिहास में आज भी सहादत खाँ का नाम एक महान क्रांतिकारी के रुप में लिया जाता है।

20. राजा शंकर शाह के योगदान पर प्रकाश डालिये?

- रानी दुर्गावती के वंशज राजा शंकर शाह महाकौशल क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणो की आहूति देने वाले वीर सिपाही थे।
- गढ़ा मंडल के अंतिम राजा शंकर शाह ने स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों को चुनौती देने के लिए जबलपुर रेजीमेन्ट के कुछ देशभक्त सिपाहियो, जमींदारों एवं ठाकुरों का मिलाकर एक बल तैयार किया था।
- 1857 में जबलपुर में स्वतंत्रता संग्राम का बीजारोपण राजा शंकर शाह द्वारा किया गया था।
- अनेक मौकों पर अंग्रेजों को चुनौती देने वाले शंकर शाह को 18 सितंबर 1857 को विलप्व भड़काने के अपराध में जबलपुर स्थित एजेसी हाउस में तो तोप से उड़ा दिया गया।
- इस घटना के बाद क्रांतिकारियों में और आक्रोश पैदा हुआ तथा अंवती बाई ने तो अंग्रेजों को मात्र भूमि से खदेड़ने का संकल्प लिया।

21. चरण पादुका के बारे में आप क्या जानते है? चर्चा कीजिए।

- 14 जनवरी 1931 को मकर संक्राति के दिन छतरपुर जिले में उर्मिल नदी के तट पर स्थित सिंहपुर चरणपादुका मैदान में चल रही जनसभा को ब्रिटिश सैन्य बल ने चारों और घेरकर पालिटिकल ऐजेन्ट फिशर के आदेश पर गोलियाँ चलाई।
- इस नरसंहार को मध्यप्रदेश का जलियावाला बाग हत्याकांड की संज्ञा दी जाती है।
- इस हत्याकांड में 21 लोगों की मृत्यु हो गई और 26 लोग घायल हुए।
- इस नरसंहार ने पूरे बुन्देलखं में अंग्रेज शासन के विरुद्ध लोगों में उत्तेजना को जगाया।

22. मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भीमा नायक के योगदान को स्पष्ट कीजिये?

उत्तर भीमा नायक

- क्रांतिकारी भीमानायक एक भील योद्धा थे जिनका जन्म बड़वानी जिले में 1840 में हुआ।
- 1857 के संग्राम में भीमा नायक की महत्वपूर्ण भूमिका रही उन्होंने सेंधवा (जिला बड़वानी) में आदिवासियों का नेतृत्व किया ।
- निमाड के रॉबिनहुड के नाम से मशहूर भीमा नायक की 1857 में हुए अंबापानी युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका रही।
- 1857 की क्रांति अपनी छाप छोड़ने वाले भीमा नायक को अंग्रेजों द्वारा धोखे से गिरफ्तार कर, कालेपानी की सजा देकर अंडमान जैल भेज दिया गया, जहाँ उनकी मृत्यु हुई।

23. 1857 की क्रांति में टांट्या भील के योगदान को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर टांट्या भील

- आदिवासियों के जननायक और निमाड का गौरव कहे जाने वाले टांट्या भील का जन्म 1842 में पश्चिमी निमाड़ में हुआ।
- इंडियन रॉबिनहुड के नाम से प्रसिद्ध टांट्या भील ने ब्रिटिश हुकूमत द्वारा ग्रामीण आदिवासी जनता के साथ शोषण और इनके मौलिक अधिकारों के साथ हो रहे अन्याय—अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई।
- गुरिल्ला युद्ध में महारत रखने वाली टांट्या भील ने लगातार 15 वर्षो तक अंग्रेजों तथा उनके समर्थक जमींदारों के खिलाफ अभियान चलाया।
- 1888-89 में गिरफ्तार टांट्या भील पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया तथा 4 दिसम्बर 1989 को उन्हें फांसी दी गयी।

24. म.प्र. के स्वतंत्रता आन्दोलन में रानी लक्ष्मीबाई के योगदान को उल्लेखित कीजिए?

उत्तर म.प्र. के स्वतंत्रता आन्दोलन

- 1857 की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई की महत्वपूर्ण भूमिका रही।
- पति की मृत्यु के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने रानी के दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इंकार किया तथा हड़प नीति के तहत झांसी का अंग्रेजी राज्य में विलय कर लिया।
- परन्तु लक्ष्मीबाई ने अपने असाधारण कौशल तथा अदम्य साहस के बल पर न सिर्फ अंग्रेजों से लोहा लिया बल्कि झांसी पर पुन: अधिकार कर लिया।
- तात्याटोपे, रघुनाथसिंह जैसे क्रांतिकारियों ने लक्ष्मीबाई का 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण साथ दिया।
- 28 मार्च 1858 में कैप्टन ह्यूरोज के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना के झांसी पर आक्रमण में रानी ने वीरतापूर्वक अंग्रेजों का प्रतिरोध किया, परन्तु बुरी तरह घायल होने पर अंग्रेजों के हाथ आने के बजाय प्राण त्यागना उचित समझा।
- लक्ष्मीबाई का यह बलिदान भविष्य में समस्त स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित करता है।

25. असहयोग आन्दोलन में मध्यप्रदेश के योगदान पर चर्चा कीजिये?

उत्तर असहयोग आन्दोलन

- 1926 में सम्पन्न असहयोग आन्दोलन के दो प्रमुख अंग थे— स्वदेशी एवं बहिष्कार मध्यप्रदेश में स्वदेशी के अन्तर्गत जहाँ अलग—अलग स्थानों पर चरखा और खादी का प्रचार हुआ वहीं दूसरी और बहिष्कार के अन्तर्गत लोगो ने सरकारी उपाधियों पदो, स्कूल—कालेजो तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया।
- जबलपुर में सेठ गोविन्ददास के नेतृत्व में माखनलाल चतुर्वेदी, पंडित रविशंकर शुक्ल, नाथूराम मोदी, केशव रामचन्द्र आदि देशभक्तों ने आन्दोलन चलाया वहीं इंदौर में अर्जुनलाल सेठी ने नेतृत्व संभाला।
- सितम्बर 2021 आन्दोलन के दौरान भोपाल में महात्मा गांधी का आगमन हुआ। जिससे असयोग आन्दोलन का उत्साह दुगना हो गया।

26. 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन'' में मध्यप्रदेश के योगदान पर चर्चा कीजिए?

उत्तर सविनय अवज्ञा आन्दोलन

- गांधीजी द्वारा 6 अप्रैल 1930 को दांडी में नमक कानून भंग कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन आन्दोलन प्रारंभ किया, इसके बाद आन्दोलन मध्यप्रदेश सहित पूरे देश में फैला।
- सेठ गोविन्ददास तथा द्वारका प्रसाद मिश्र ने जबलपुर में नमक बनाकर नमक कानून तोडा तथा अनेक क्रांतिकारियों द्वारा आन्दोलन की शपथ ली गई एवं स्वदेशी व शराबबंदी को भी आंदोलन से जोड़ा गया।
- ग्वालियर में जहाँ लक्ष्मीबाई गरदने ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को लेकर एक संस्था बनाई वही रीवा में आन्दोलन का नेतृत्व केप्टन अवधेश प्रताप सिंह तथा शंभुनाथ शुक्ल ने किया।
- सिवनी तथा बैतूल का जंगल सत्याग्रह भी सविनय आन्दोलन का ही अंग था, जिसके तहत वन अधिनियमों का उल्लघंन किया गया।
- इस आन्दोलन के दौरान ही ''चरणा पादुका नरसंहार'' हुआ जिसे मध्यप्रदेश का जलियावाला बाग कांड कहा जाता ळें

27. 'जंगल सत्याग्रह'' के बारे में आप क्या जानते है? संक्षिप्त वर्णन कीजिय।

उत्तर ''जंगल सत्याग्रह''

- ब्रिटिश काल में वन अधिनियमों द्वारा वन संसाधनों के उपयोग पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिये गये थे। स्थानीय निवासी वनों से न लकड़ी ले सकते थे न घास काट सकते थे।
- अगस्त 1930 में कांग्रेस ने नमक सत्याग्रह के साथ—साथ जंगल सत्याग्रह भी चलो का जैब अह्वान किया तो समस्त क्षेत्र में वन अधिनियम के उल्लंघन की लहर चल पड़ी, इसे ही जंगल सत्याग्रह कहा गया।
- बैतूल जिले का घोड़ाडोंगरी क्षेत्र तथा सिवनी जिले का तूरिया क्षेत्र जंगल सत्याग्रह का प्रमुख क्षेत्र रहा।

- घोड़ाडोंगरी तथा तूरिया क्षेत्र में अनेक आदिवासियों ने जंगल कानून का प्रतिरोध किया जिनमें घोड़ाडोगरी के गंजनसिंह कोरकू का नेतृत्व अभूतपूर्व रहा।

28. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश के योगदान का उल्लेख कीजिए?

उत्तर राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में मध्यप्रदेश के योगदान के निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते है:—

- **झण्डा सत्याग्रह** (1923): जबलपुर में नगरपालिका का पर झंडा फहराने को लेकर ब्रिटिश प्रशासन व सत्याग्रही आमने सामने हुए। देवदास गांधी, राजागोपालाचार्य तथा राजेन्द्र प्रसाद ने नेतृत्व किया।
- **नमक सत्याग्रह** (1930): गांधीजी के नमक सत्याग्रह से प्रेरणा लेकर जबलपुर में सेठ गोविंददास एवं द्वारिका प्रसाद ने नमक सत्याग्रह चलाया।
- **जंगल सत्याग्रह** (1930): जंगल कानूनों का प्रतिरोध करने के लिए सिवनी तथा बैतूल जिले में मुख्यत: आदिवासियों द्वारा जंगल सत्याग्रह चलाया गया।
- **चरण पादुका नरसंहार (1931):** क्रांतिकारी गतिविधियों के क्रम में छतरपुर जिले के चरण पादुका ग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों की शांतिपूर्ण बैठक पर पुलिस द्वारा गोलिया चलाई गई, 6 सैनानी शहीद हुए।
- **त्रिपुरी सम्मेलन (1939):** क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र बन चुके जबलपुर के समीप त्रिपुरी में सुभाषचन्द्र बोस के की अध्यक्षता में कांग्रेस का सम्मेलन हुआ।
- **भारत छोड़ो आन्दोलन (1942):** गांधीजी के 'करो या मरो' नारे से प्रेरणा लेकर म.प्र. में भी अनेक स्थानों पर विद्रोह हुए, जिससे स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्राप्त हुई।

29. भारत छोडो आन्दोलन में मध्यप्रदेश के योगदान की चर्चा कीजिए?

उत्तर भारत छोडो आन्दोलन

- 7 – 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस कमेटी द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन प्रस्ताव पारित करने के साथ ही म.प्र सहित देश के अन्य भागों में आन्दोलन प्रारंभ हुआ।
- गांधीजी के ''करो या मरो'' नारे से प्रेरणा लेकर जबलपुर ग्वालियर इंदौर, भोपाल आदि स्थानों पर हड़ताल एवं सभाए हुई।
- अंग्रेज सरकार द्वारा अनेक स्थानों पर धारा 144 लगाई तथा जनसभाओं को प्रतिबंधित किया, प्रतिक्रिया स्वरुप आन्दोलनकारियों ने अनेक स्थानों पर टेलीफोन लाइनवारी, रेललाइन तथा सरकारी भवनों को क्षति पहुँचाई।
- आन्दोलन के दौरान इंदौर में जहाँ ''सराफा सत्याग्रह'' हुआ वही रीवा में प्रसिद्ध चावल सत्याग्रह हुआ।
- बैतूल में विष्णुसिंह गोंड के नेतृत्व में अनेक आदिवासियों ने कई दिनों तक घोड़डोगरी क्षेत्र पर कब्जा बनाये रखा, पुलिस गोलीबारी गोंड शहीद भी हुए तथा अन्य घायल इस प्रकार समस्त म.प्र ने भारत छोड़ो आन्दोलन भी अपनी सक्रीय भूमिका निभाई।

An Institute for MPPSC Examination

30. मध्यप्रदेश के झंडा सत्याग्रह के बारे में क्या जानते है? वर्णन कीजिए।

उत्तर मध्यप्रदेश के झंडा सत्याग्रह

- प्रदेश में झंडा सत्याग्रह उस समय प्रारंभ हुआ जब 8 मार्च 1923 को कांग्रेस कमेटी द्वारा जबलपुर नगरपालिका भवन पर तिरंगा फहराने पर यूरोपीय डिप्टी कमिश्नर ने न सिर्फ तिरंगे को उतारने का आदेश दिया बल्कि उसका अपमान भी किया।
- इस अपमाजनक कार्यवाही के विरोध में पण्डित सुंदरलाल, सुभद्राकुमारी चौहान, नाथूराम मोदी तथा अन्य स्वंय सेवकों ने झंडे के साथ जूलूस निकाला तथा विरोध किया। परिणामस्वरुप उन्हें गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया गया।
- शीघ्र ही आन्दोलन ने अखिल भारतीय रुप धारण कर दिया। जिसके परिणामस्वरुप ब्रिटिश अधिकारियों ने झुककर सौ स्वंयसेवकों 8 अगस्त 1923 को राष्ट्रध्वज के साथ जुलूस निकालने की अनुमति प्रदान की।
- अनुमति पश्चात् माखनलाल चतुर्वेदी वल्लभ भाई पटेल तथा राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में राष्ट्रध्वज सहित जुलूस निकाला गया। तथा लक्ष्य प्राप्तहोने पर आन्दोलन समाप्त हो गया।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत: प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न कला प्रारूपों, साहित्य, पव (उत्सव) एवं वास्तुकला वास्तुकला के प्रमुख पक्ष

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

31. भोजपुर

- रायसेन जिले में बेतवा नदि के तट पर स्थित ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व का स्थल
- पूर्व का सोमनाथ नाम से प्रसिद्ध
- पूर्व का सोमनाथ नाम से प्रसिद्ध
- परमार राजा भोज द्वारा निर्मित विशाल शिव मंदिर

32. गूजरी महल

- ग्वालियर के किले में राजा मानसिंह द्वारा गूजरी रानी मृगनयनी के लिए निर्मित महल
- मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य का सुंदर नमूना

33. सास–बहू मंदिर

- 11 वीं शताब्दी में कछवाहा शासक महिपाल द्वारा ग्वालियर किले में निर्मित मंदिर
- मूल नाम सहस्त्रबाहु जो आगे चलकर सास–बहू में परिवर्तित हुआ

34. मैहर का महत्व

- सतना जिले में स्थित महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थल
- विंध्य पर्वत की 600 फीट ऊँची त्रिकुटा पहाड़ी पर माँ दुर्गा के शारदीय रूप शारदा माँ का प्रसिद्ध मंदिर स्थित

35. मुक्तागिरी का महत्व

- बैतूल जिले के भैंसादेही में स्थित जैन तीर्थस्थल।
- कुल 52 प्राचीन जैन मंदिर स्थित।
- मगध सम्राट बिम्बसार के अभिलेख प्राप्त हुए है।

36. हरिशंकर परसाई

- हिंदी के प्रसिद्ध लेखक व व्यंग्यकार।
- जन्म–जमानी, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)।
- प्रमुख रचनाएँ– हँसते है रोते है, तट की खोज, भूत के पाँव पीछे।

37. सुभद्राकुमारी चौहान की कोई तीन रचनाएँ

- काव्य संग्रह– त्रिधार, मुकुल, झांसी की रानी।
- कहानी संग्रह– बिखरे मोती, उन्मादिनी।
- बाल साहित्य– सभा के खेल, सीधे–साधे चित्र।

38. विष्णु चिंचालकर

- मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध चित्रकार।
- जन्म–1917 में देवास में।
- लैण्ड ऑफ आर्ट पोट्रेट में विशेष ख्याति प्राप्त की।

39. हबीब तनवीर

- 1923 में रायपुर में जन्में प्रदेश के प्रसिद्ध रंगकर्मी
- हिन्दुस्तान थियेटर की स्थापना की तथा फिल्म इण्डिया पत्रिका के सहायक सम्पादक रहे।
- रमन मैग्सेसे तथा पद्मविभूषण सहित अनेक पुरुस्कारों से सम्मानित हुए।

40. आल्हा गायन

- बुन्देलखंड की एकल तथा सामूहिक लोकगायन शैली।
- मुख्य विषय: महोबा के आल्हा व ऊदल की वीरगाथा।
- प्राय: वर्षा ऋतु में रात के अवसर पर गायन।

41. कलगी तुर्रा

- बुन्देलखंड की एकल तथा सामूहिक लोकगायन शैली।
- शक्ति एवं शिव की आराधाना में रात के समय गायन।

42. भरथरी गायन का क्षेत्र व विषय

- मालवा क्षेत्र की एकल व सामूहिक गायन शैली।
- विषय के रुप में गोरखवाणी, कबीर, मीरा, भरथरी आदि के भजन।
- प्राय: सुबह के समय नागपन्थी लोगों द्वारा गायन।

43. ढोलामारु गायन

- ढोला–मारु की प्रेम कथा पर आधारित उच्च स्वर लोकगायन शैली।
- रात के समय ढोला–मारु नाटक के साथ–साथ गायन।
- मुख्यत: मालवा, निमाड़ तथा बुन्देलखण्ड में प्रचलित।

44. मध्यप्रदेश कला परिषद का उद्देश्य

- 1952 में मध्यभारत कलापरिषद के रुप में स्थापित।
- उद्देश्य– प्रदेश में संगीत, नृत्यकला, चित्रकला व रंगमच को संरक्षण व विस्तार प्रदान करना।

45. कालीदास अकादमी

- स्थापना– 1977 में उज्जैन में।
- उद्देश्य–कालीदास साहित्य पर शोध, साहित्य संरक्षण, प्रकाशन व विकास पूर्वा नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन।

46. मध्यप्रदेश तुलसी अकादमी

- तुलसी साहित्य पर शोध, अन्वेषण, प्रचारप्रसार, संरक्षण व विद्वानों को प्रोत्साहन देने हेतु सन् 1987 में स्थापित।
- मुख्यालय– भोपाल
- समाधान नामक पत्रिका का प्रकाशन।

An Institute for MPPSC Examination

47. तुलसी सम्मान किस क्षेत्र

- मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्ष 1983-84 में स्थापित यह सम्मान आदिवासी लोक एवं पारंपरिक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट सृजनात्मकता एवं श्रेष्ठ उपलब्धि के लिए दिया जाता है।

48. प्रदेश के कोई तीन गुफा स्थल

- बाघ की गुफाएँ– धार जिले में स्थित अंजता के समान कलापूर्ण व नियमित युक्त।
- उदयगिरी की गुफाएँ– विदिशा जिले में स्थित चौथी व पाँचवी शताब्दी की गुफाएँ।
- भर्तृहरि की गुफाएँ– उज्जैन जिले में स्थित परमार राजाओं द्वारा 11 वी शताब्दी में निर्मित।

49. कलगी–तुर्रा

- मूलत: निमाण व मालवा की प्रतिस्पर्धात्मक गायन शैली।
- कलगी शक्ति से तथा तुर्रा शिव से संबंधित दो अखाडे प्रमुख होते है।
- प्रश्नोत्तर शैली में गायन।

50. पांडवानी नाट्य शैली

- मूलत: छत्तीसगढ़ का एकल नाट्य जिसका प्रचलन छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे बघेलखण्ड के क्षेत्र में है।
- पांडव कथा अर्थात् महाभारत की कथा का आयोजन।
- तीजनबाई, शांतिबाई चेलकने व पुनियाबाई मुख्य कलाकार।

51. काठी नृत्य

- निमाड़ क्षेत्र का मातृपूजक लोकनृत्य।
- मूल स्थान गुजरात का काठियावाड़ प्रदेश।
- प्रबोधनी एकादशी से महाशिवरात्री तक आयोजन।

52. गणगौर

- निमाड़ क्षेत्र का धार्मिक लोकनृत्य।
- चैत्रमास में गणगौर पर्व के अवसर पर।
- झोला एवं झालरिया दो मुख्य शैलिया है।

53. बधाई नृत्य

- मुख्यत: बुंदेलखंड में शीतला माता की आराधना में किया जाने वाला नृत्य।
- मांगलिक कार्य, फसलों की कटाई एवं बुवाई के अवसर पर।
- ढपली, मृदंग व मंजीरा मुख्य वाद्ययंत्र।

54. करमा नृत्य

- मंडला क्षेत्र में गोंड एवं बैगा आदिवासियों का नृत्य।
- लोकनृत्यों का राजा कहा जाता है।
- अप्रैल 2016 में गिनीज बुक में शामिल होने वाला देश का पहला लोकनृत्य (लगभग 3000 छात्र/छात्राओं द्वारा नृत्य करने के कारण)

55. परधोनी नृत्य

- मुख्यत: विवाह के अवसर पर बैगा अदिवासियों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य।
- बैगा नवयुवक हाथी के समान पोषाक पहनकर नृत्य करते है।

56. माच

- मध्यप्रदेश का राजकीय नाट्य, जिसका उद्‌भव उज्जैन माना माजा है।
- मालवा क्षेत्र में मांगलिक अवसर एवं त्यौहारों के समय आयोजन।
- मालवी लोकजनीवन के विभिन्न चरित्रों एवं कृष्ण की लीलाओं का अभिनय किया जाता है।

57. कवि केशवदास

- हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के प्रथम आचार्य एवं महाकवि।
- जन्म–1555 ई. में ओरछा के ब्राम्हण परिवार में।
- ओरछा नरेश इन्द्रजीत के दरबारी कवि व राजगुरु।

58. मुल्ला रमूजी

- उर्दू के प्रसिद्ध लेखक एवं शायर।
- जन्म–21 मई 1896, भोपाल
- गुलाबी उर्दू शैली के जन्मदाता तथा अंग्रेजों के विरुद्ध व्यंगात्मक नज्में लिखी।

59. संत सिंगाजी

- प्रदेश के प्रसिद्ध लोक साहित्यकार।
- जन्म–1571 ई. खजूरी गांव, बड़वानी।
- प्रमुख रचनाएँ– बारमासी, दोषबोध, नरण तथा सातवार (निमाड़ी)

60. जगनिक

- कलिंजर नरेश परिमल देव के दरबारी कवि एवं साहित्यकार।
- जन्म–1230 ई. (रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार)
- रचनाएँ– आल्हाखण्ड, परिमल रासो।

61. ईसुरी

- बुंदेली साहित्य के सुप्रसिद्ध लोकसाहित्यकार।
- जन्म–1831 ई. मेंढ़की गांव, मऊरानीपुर (उ.प्र)
- लोकगायन की एक नई विद्या ''फाग'' का विकास किया।
- बुंदेलखंड के जयदेव के नाम से प्रसिद्ध व ईसुरी की फागें प्रसिद्ध रचनाएँ है।

62. जहाज महल

- मांडू में स्थित अफगान वास्तुकला का सुंदर उदाहरण।
- निर्माणकर्ता— खिलजी शासक ग्यासुद्दीन खिलजी।
- दो मानव निर्मित झीलों—कपूर तालब तथा मुंज तालाब के मध्य अवस्थित।

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

63. पर्यटन की दृष्टि से भेड़ाघाट के महत्व को स्पष्ट कीजिए?

- भेड़ाघाट जबलपुर के निकट एक प्राकृतिक पर्यटन स्थल है।
- नर्मदा नदी के दोनों तटों पर संगमरमर की ऊँची चट्टाने भेड़ाघाट की विशेषताएँ है ये चट्टाने अनेक रंगों में है तथा चांदनी की रोशनी में हीरे—मोतियों की भांति चमकती है।
- पर्यटन की दृष्टि से भेड़ाघाट का विशेष महत्व है।
- चौसठ योगिनी तथा अन्य मंदिर भी भेड़ाघाट की विशेषता है जिसे देखने सैकड़ो पर्यटक हर वर्ष भेड़ाघाट आते है।

64. अलाउद्दीन खाँ संगीत का कला अकादमी का परिचय दीजिए।

- इस संस्था स्थापना 1979 में की गई, अकादमी का मुख्य कार्य मध्यप्रदेश में संगीत, नृत्य, ललित कला, रंगमच, आदि को प्रोत्साहन देना है।
- इस अकादमी द्वारा प्रदेश में प्रतिष्ठापूर्ण खजुराहो समारोह, तानसेन संगीत समारोह, राष्ट्रीय हिन्दी नाट्य समारोह, कुमार गंधर्व संगीत समारोह आदि आयोजित किये जाते है।
- अकादमी द्वारा कला—संस्कृति पर केन्द्रित 'कलावती'' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन किया जाता है।
- अकादमी के अन्तर्गत संगीत प्रभाग भी कार्यरत है।

65. स्थापत्य एवं कला के क्षेत्र में खजुराहों के मंदिरों का परिचय दीजिए।

- छतरपुर जिले में स्थित खजुराहों के मंदिर अपनी स्थापत्य एवं मूर्तियों के कारण विख्यात है।
- 1986 में इन मंदिरों को यूनेस्को ने अपनी विश्व विरासत सूची में शामिल किया।
- मंदिरों का निर्माण 950-1050 ईसवी के मध्य चंदेल शासको द्वारा करवाया गया था।
- मंदिरों का निर्माण स्थापत्य की नागर शैली में हुआ है तथा यह ग्रेनाइट व लाल बलुआ पत्थरों से बने है।
- ये मंदिर शैव, वैष्णव व जैन धर्मो से संबंधित है।
- ये मंदिर न केवल अपनी स्थापत्य कला बल्कि, मूर्तिकला की दृष्टि से भी बेजोड़ है, मंदिर के भीतरी व बाहरी दीवारों पर अंकित मूर्तिया इनकी विशेषता है।

66. मध्यप्रदेश में ऐतिहासिक व पर्यटन की दृष्टि से महेश्वर का महत्व स्पष्ट कीजिए।

- महेश्वर मध्यप्रदेश के खरगोन जिले में स्थित एक धार्मिक व पर्यटन स्थल है।
- प्राचीन काल में महेश्वर को महिष्मती के नाम से जाना जाता था जो प्राचीन चेदि जनपद की राजधानी हुआ करती थी जबकि बौद्ध साहित्य में महिष्मती को दक्षिणी अवंति का मुख्य नगर कहा गया है।
- अहिल्याबाई होल्कर के काल में महेश्वर की प्रतिष्ठा व गौरव में पर्याप्त वृद्धि हुई है।
- पर्यटन की दृष्टि से अहिल्याबाई द्वारा निर्मित भवनों, अहिल्या घाट, पेशवा घाट, फड़से घाट आदि का विशेष महत्व है।
- उपर्युक्त के अलावा नर्मदा नदी का सौदर्य, अहिल्याबाई का किला, निकट ही सहस्त्रधारा जलप्रपात तथा माहेश्वरी साड़िया इस नगर को ऐतिहासिक व पर्यटन की दृष्टि से विशिष्ट स्थान दिलाते है।

67. धार्मिक व पर्यटन महत्व की दृष्टि से चित्रकूट का वर्णन कीजिए।

- मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश की सीमा पर स्थित चित्रकूट अपने धार्मिक व दर्शनीय महत्व की दृष्टि से विशिष्ट स्थान पर रखता है।
- चित्रकूट वह स्थान है जहाँ भगवान राम में भाई लक्ष्मण व सीता माता के साथ अपने वनवास के साढे ग्यारह वर्ष व्यतीत किये थे।
- चित्रकूट में ब्रम्हा, विष्णु और महेश ने बाल अवतार लिये थे। साथ ही तुलसीदास व सती अनुसुइया की तपस्थ स्थली के रुप में चित्रकूट का महत्व है।
- रामघाट, जानकीकुण्ड, कामदगिरी, भरतकूप, सति अनुसइया आश्रम आदि चित्रकूट में प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

68. पर्यटन स्थल के रुप में पचमढ़ी का वर्णन करते हुए यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का उल्लेख कीजिए।

- पचमढ़ी मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में सतपुड़ा पर्वत पर स्थित एक सुंदर पर्वतीय स्थल है।
- अपनी प्राकृतिक सौदर्यता के कारण पचमढ़ी को सतपुड़ा की रानी की संज्ञा दी जाती है।
- पचमढ़ी शब्द पंच और मढ़ी अर्थात् पाँच गुफाओं से मिलकर बना है। ऐसी मान्यता है कि इन्ही पांच गुफाओं में पाँड़वों ने अपना अधिकांश अज्ञातवास व्यतीत किया था।
- **प्रमुख दर्शनीय स्थलः** महादेव गुफा, जटाशंकर, चौरागढ़, धूपगढ़, पांडव गुफाएँ, बायोस्फियर रिजर्व, अप्सरा विहार

69. भर्तृहरि का परिचय देते हुए इनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

- परंपरानुसार भर्तृहरि उज्जयनी के राजा तथा संस्कृत के महान कवि थे।
- उन्होंने सुन्दर और रसपूर्ण भाषा में नीति, वैराग्य तथा श्रृंगार जैसे गूढ़ विषयों पर शतक—काव्य लिखे।
- अपने श्रृंगार शतक में भर्तृहरि बताते है कि परमवीर पुरुष भी सुंदरियों के मोहपाश को नहीं तोड़ पाता और कामदेव के आगे विवश हो जाता है।
- वैराग्य शतक में वे स्पष्ट करते है कि समस्त भोग, सौंदर्य व सम्पत्ति नश्वर है और वास्तविक चीज है वैराग्य जो मनुष्य को शांत करता है।
- नीति शतक में वे जीवन के लिए उपयोगी नीति संबंधी अनेक बाते बताते है जैसे—शत्रु उसे भला क्या हानि पहुँचा सकता है, जिसका लक्षण उसका क्रोध ही कर रहा है।

70. एक पर्यटन केन्द्र के रुप में मांडू का महत्व बताइये।

- मांडू मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थित एक सुंदर प्राकृतिक व पर्यटन स्थल है।
- नर्मदा नदी व सुंदर हरी भरी पहाड़ियों की सुंदरता के कारण सुल्तान होशंगशाह ने इसे शादियाबाद (आनंद की नगरी) नाम दिया था। वही वर्तमान में इसे मालवा का कश्मीर कहा जाता है।
- पर्यटन केन्द्र के रुप में बाजबहादुर रुपमति की प्रेमकथा मांडू की एक अन्य विशेषता है।
- जहाज महल, हिंडोला महल, रानीरुपमति महल, होशंगशाह का मकबरा दिल्ली दरवाजा, अशर्फी महल, नीलकंठ मंदिर आदि मांडू के प्रमुख दर्शनीय स्थल है।
- पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष यहाँ मांडू उत्सव का आयोजन किया जाता है।

71. एक पर्यटक व ऐतिहासिक स्थल के रुप में औरछा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

- औरछा मध्यप्रदेश के निवाड़ी जिले में बेतवा नदी के तट पर बुंदेला राजपूतों की भूमि के रुप में विख्यात है।
- राजा रुद्रप्रताप सिंह आधुनिक औरछा के संस्थापक माने जाते है जिन्होंने १५०१ में इस नगर की स्थापना की। तत्पश्चात् जहाँगीर के समय वीरसिंह बुंदेला व औरंगजेब के समय छत्रसाल यहाँ के प्रसिद्ध शासक हुए।
- मध्यकाल में औरछा भारत के महत्वपूर्ण नगर के रुप में उभरा, जो दिल्ली और आगरा जैसे नगरों की कोटि का था।
- कला और संस्कृति के केन्द्र के रुप में भी ओरछा का अपना महत्व था। रीतिकाल के कवि केशवदास ओरछा नरेश वीरसिंह देव के दरबारी थे।
- ओरछा का किला, रामराजा मंदिर, चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, रामप्रवीण महल, जहाँगीर महल, फूलबाग तथा बेतवा नदी के तट पर स्थित छतरियाँ आदि ओरछा की प्रमुख ऐतिहासिक इमारत है जो ओरछा के ऐतिहासिक महत्व को प्रकट करती है।

72. मध्यप्रदेश में धार्मिक पर्यटक स्थल के रुप में ओकारेश्वर का क्या महत्व है? स्पष्ट कीजिए।

- ओंकारेश्वर मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले में नर्मदा नदी पर स्थित धार्मिक पर्यटक स्थल है।
- नर्मदा नदी के दो धाराओं में विभक्त होने से बने ॐ आकार के द्वीप के कारण इसे ओंकारेश्वर कहा गया।
- यह प्रसिद्ध शैव स्थल है तथा यहाँ का मांधाता शिव मंदिर भारत के द्वादश ज्योर्तिलिगों में से एक है।
- मान्यता के अनुसार ओंकारेश्वर वही स्थान है जहाँ राजा मांधाता (जो कि भगवान राम के पूर्वज थे) ने कठोर तपस्या की थी तथा उनके वरदान मांगने पर ही भगवान शिव यहाँ विराजमान हुए।
- ओंकारेश्वर में कुल 68 तीर्थ है, जिनमें 33 करोड देवता सपरिवार निवास करते है।
- अपनी इसी धार्मिक महत्व के कारण ओंकारेश्वर प्रदेश का एक प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटक स्थल है जहाँ हर वर्ष अनेको पर्यटक दर्शन हेतु आते है।

An Institute for MPPSC Examination

73. बाघ की गुफाएँ कहाँ स्थित है? कला की दृष्टि से उनका क्या महत्व है? संक्षिप्त विवरण दीजिए।

- बाघ की गुफाएँ मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थित है, यह गुप्त काल में निर्मित गुफाए है तथा इनका मुख्य संबंध बौद्ध धर्म से है।
- इन गुफाओं की खोज 1818 ई. में हुई जहाँ कुल 9 गुफाएँ है जिनमें बौद्ध धर्म से संबंधित भित्ति चित्र पाये गये है।
- बाघ की गुफाएँ अपनी उच्चकोटि की चित्रकारी व मूर्तिकारी के कारण अजंता व ऐलोरा की गुफाओं समकक्ष दर्जा रखती है।
- यह गुफाएँ प्राकृतिक न होते हुए मानव निर्मित है, जो शैलकृत स्थापत्य (रॉक कट आर्टिटेक्चर) के अन्तर्गत आती है।
- गुफाओं में बुद्ध व बोधिसत्व के अतिरिक्त राजदरबार, संगीत पुष्पमाला आदि से संबंधित भित्तिचित्र भी मौजूद है।
- इन गुफाओं को राष्ट्रीय महत्व की धरोहर घोषित किया गया है।

74. संस्कृत के साहित्यकार कालीदास और उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

- कालीदास संस्कृत साहित्य के महान कवि और नाटककार थे जिन्हें अपनी प्रतिभा के कारण भारत के शेक्सपियर की संज्ञा दी जाती है।
- कालीदास की रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि उनमें भारतीय धर्म, संस्कृति और इतिहास का भी दर्शन प्राप्त होता है।

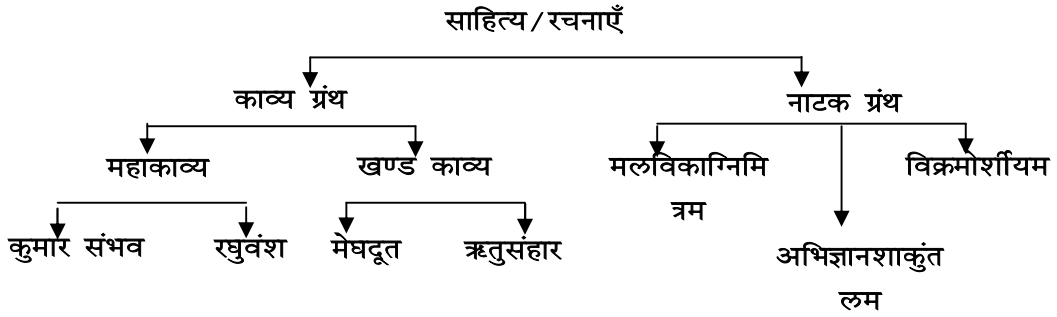

75. जगनिक का परिचय देते हुये इनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

- जगनिक कलिंजर के चन्देल राजा परमार्दिदेव (परमाल 1165-1203 ई.) के आश्रयी कवि थे।
- जगनिक ने परमाल रासो की रचना की थी जिसमें राजा परमाल के यश और वीरता का वर्णन वीरगाथात्मक रासो काव्य शैली में किया गया है।
- वर्तमान समय में इस ग्रंथ के उपलब्ध हिस्से '' आल्हा खंड' में राजा परमाल के ही दरबारी सेनापतियों आल्हा व ऊदल की वीरता का ओजस्वपूर्ण है।
- इस काव्य रचना का प्रचार प्रसार समस्त उत्तर भारत में देखने को मिलता है।
- आल्हा लोकगाथा वर्षा ऋतु में विशेष रुप से पाई जाती है।

76. बुंदेली साहित्य में ईसुरी के योगदान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

- ईसुरी बुंदेली साहित्य के महानतम कवि थे, जिनका जन्म सन् 1838 ई. में उ.प्र. के झाँसी जिले के मकरानीपुर में हुआ।
- भारतेन्दु युग के लोककवि ईसुरी पंडित गंगाधर व्यास के समकालीन थे और आज भी बुंदेलखण्ड के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि है।
- ईसुरी की रचनाओं में ग्राम्य संस्कृति और सौंदर्य का वास्तविक चित्रण मिलता है।
- ईसुरी की ख्याति फाग के रूप में लिखी गई उन रचनाओं के लिए है जो विशेष रूप से युवाओ में बहुत लोकप्रिय हुई।
- ईसुरी की रचनाओं में बुंदेली लोक जीवन की सरलता सामाजिक परिवेश, राजनीति, भक्तियोग, संयोग, वियोग, लौकिकता आदि का मिश्रण पाया जाता है।
- ईसुरी को बुंदेलखण्ड में लोककवि के रूप में जो ख्याति प्राप्त हुई है वह किसी अन्य लोककवि को प्राप्त नहीं हुई है।

77. माखनलाल चतुर्वेदी का परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान की चर्चा कीजिए।

- माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968) भारत के प्रसिद्ध कवि, लेखक व पत्रकार थे जिनका जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक ग्राम में हुआ था।
- आपने राष्ट्रवादी आन्दोलन में भाग लिया तथा असहयोग आंदोलन (1920-22) तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930) के दौरान जेल की यात्राएँ भी की।
- माखनलाल चतुर्वेदी जी ने प्रभा तथा कर्मवीर जैसे पत्रो के सम्पादक के रूप में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध तीव्र प्रचार किया।
- हिमतरंगिनी, हिमकिरीसी, युग चरण आपकी प्रसिद्ध काव्य कृतिया है वही साहित्य देवता, समय के पाँव, अमीर इरादे गरीब इरादे आपकी प्रमुख गद्य कृतियाँ है।
- पुष्प की अभिलाषा आपकी प्रसिद्ध कविताँ है जिसमें आपने राष्ट्रप्रेम का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है।

78. हरिशंकर परसाई का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर चर्चा कीजिए।

- हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक एवं व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई (1922-1995 ई) का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी ग्राम में हुआ था।
- वे हिन्दी के पहले रचनाकार थे जिन्होंने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग एक 'विद्या' के रुप में किया गया तथा व्यंग्य को केवल मनोरंजन की परिधि से बाहर निकालकर उसे विभिन्न सामाजिक विषयों से जोड़ा।

प्रमुख कृतियाँ

- उपन्यास — रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज
- कहानी संग्रह — जैसे उनके दिन फिरे, हँसते है रोते है।
- संस्मरण — तिरछी रेखाएँ
- लेख संग्रह — भूत के पाँव पीछे, तब की बात और थी, बेईमानी की परत अपनी अपनी बीमारी, ऐसा भी सोचा जाता है आदि।

- परसाई जीने जबलपुर से वसुधा नामक मासिक पत्रिका निकाली, नई दुनियाँ आदि समाचार पत्रों में में स्तंभ लेख व कहानियाँ आदि लिखी तथा अंत में एक व्यंगकार के रुप में प्रसिद्ध हुए।

79. मांडना चित्रकारी की विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन करते हुए इसका सांस्कृतिक महत्व बताइये।

- मांडना शब्द 'मंडन' से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है सजाना या विभूषित करना।
- मांडना चित्रकारी भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का अंग है जो लोक अभिव्यक्ति की कला के रुप में राजस्थान तथा मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न भागों में प्रचलित है।
- मांडना चित्रकला के अन्तर्गत महिलाएँ विभिन्न पर्वो, उत्सवों आदि पर घर की दीवारों या भूमि को विभिन्न चित्रों से अलंकृत करती है।
- **मांडना कला की प्रमुख विशेषताएँ—**
  - मुख्यत: दीवारों, भूमि अथवा मिट्टी के बरतनों पर चित्रांकन।
  - चित्रों में स्थानीय संस्कृति व धार्मिकता का महत्व।
  - महिला कलाकारों की प्रधानता।
  - पारंपरिक रुप से घरों में निर्मित रंगों का प्रयोग आदि।

80. सुभद्रा कुमारी चौहान का संक्षिप्त परिचय देते हुए हिन्दी साहित्य में आपके योगदान का उल्लेख कीजिए।

- सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 में प्रयागराज के निहालपुर में एक ठाकुर परिवार में हुआ।
- वे राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवियित्री व प्रसिद्ध लेखिका रही। स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात् आपने अपनी अनुभूतियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया।
- सुभद्राकुमारी ने गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई।

आपकी रचनाएँ इस प्रकार है:

õ **काव्य संग्रह** : मुकुल, त्रिधारा, झांसी की रानी, वीरो का कैसा

õ **कहानी संग्रह**: बिखरे मोती 1932, उन्मादिनी 1934 सीधे साधे चित्र 1947

õ **बाल साहित्य**: सभा के खेल, कदम्ब का पेड़ आदि।

81. बालकृष्ण शर्मा ''नवीन' का संक्षिप्त परिचय हिन्दी साहित्य में योगदान स्पष्ट कीजिए।

- बालकृष्णा शर्मा नवीन राष्ट्रीय विचारधारा के सशक्त और क्रांतिकारी कवि के रुप विख्यात है।
- आपका जन्म शाजापुर (मध्यप्रदेश) के मयाना ग्राम में सन् 1897 मे हुआ।
- आप गाँधीजी के विचारों से प्रभावित थे तथा आपके जीवन पर माखनलाल चतुर्वेदी तथा गणेशशंकर विद्यार्थी का भी प्रभाव रहा।

- नवीन जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से जहाँ राष्ट्रीयता की भावना जगाने का प्रयास किया वही शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने का भी प्रयास किया।
- आपने अपनी भाषा ब्रज के साथ–साथ उर्दू, संस्कृत, बुंदेलीखंडी शब्दों का भी प्रयोग समान रुप से अपनी रचनाओं में किया, साथ ही आपके साहित्य में राष्ट्रीयता के साथ–साथ आध्यात्म, दर्शन, रहस्य, श्रृंगार आदि विषयों को भी समान महत्व दिया।
- बालकृष्णा शर्मा 'नवीन' जी की प्रमुख रचनाएं
  - **महाकाव्य** : उर्मिला (1957)
  - **खण्डकाव्य** : प्राणर्पण (1962
  - **काव्य संकलन:** कुमकुम, रश्मिरेखा, हम विषपायी जन्म के, अपलक आदि।

82. मध्यप्रदेश में बोली जाने वाली प्रमुख बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

मध्यप्रदेश में बोली जाने वाली प्रमुख बोलिया इस प्रकार है

- **बुन्देलीखण्डी**–बुंदेलीखण्डी का जन्म भारतीय आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत शोरसेनी अपभ्रंश से हुआ तथा जर्जा ग्रियर्सन ने इसे बुंदेलखण्डी नामकरण किया। यह बोली मध्यप्रदेश के सागर, टीकमगढ़, पन्ना, दमोह, छतरपुर, दतिया, आदि में बोली जाती है।
- **बघेलखण्डी**– भारतीय आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत अर्द्ध मगधी अपभ्रंश से जन्मी पूर्वी हिन्दी की एक महत्वपूर्ण बोली बघेलखण्डी है। यह रीवा, शहडोल, सतना, और सीधी आदि जिलों में बोली जाती है।
- **मालवी**– शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हिन्दी के राजस्थानी वर्ग की प्रमुख बोली मालवी है तथा यह प्रदेश के देवास, इंदौर तथा उज्जैन जिलो में मुख्यत: बोली जाती है।
- **निमाड़ी**–निमाड़ी भी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है तथा यह प्रदेश के पश्चिमी भाग खण्डवा, खरगौन, बड़वानी, धार, झाबुआ आदि के जिलों में बोली जाती है।
- **ब्रजभाषा**– यह मुख्यत: प्रदेश के भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, श्योपुर आदि जिलों में बोली जाती है।

83. भवभूति के संस्कृत साहित्य में योगदान पर चर्चा कीजिए।

- ''भारतीय मिल्टन'' कहे जाने वाले भवभूति संस्कृत के महान नाटककार थे जिनका संस्कृत साहित्य में योगदान अविस्मरणीय है।
- कल्हण की ''राजतरंगिणी'' से मिली जानकारी के अनुसार भवभूति कन्नौज के शासक यशोवर्मन के दरबारी कवि थे जिस आधार पर विद्वान उनका जन्म सातवी शताब्दी मानते है।
- नाटक, व्याकरण, धर्मशाला आदि पर असाधारण अधिकार रखने के साथ–साथ भवभूति दर्शन व आध्यात्म के भी प्रकार पंण्डित थे।
- भवभूति ने तीन प्रसिद्ध संस्कृति नाटकों मालती माधव, महावीर चरित्र तथा उत्तर रामचरित की रचना की।
- मालती माधव में जहाँ भवभूति द्वारा मालती व माधव की प्रणयकथा का वर्णन किया गया है वहीं 'महावीर चरित्र' वाल्मिकी रामायण पर आधारित नाटक है जिसमें राम के विवाह से रावण वध और राज्याभिषेक तक की घटनाओं का चित्रण किया गया है। जबकि उत्तर रामचरित संस्कृत साहित्य का प्रथम ''दुखान्त'' नाटक है। जिसमें रामायण के उत्तरार्द्ध की कथा का वर्णन है।
- संस्कृत साहित्य में भवभूति ने रचना क्रम, बौद्विकता व काव्यकुशलता के जो प्रतिमान स्थापित किये है वे आज भी अन्य साहित्यकारों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने हुए है।

84. मध्यकालीन साहित्यकार केशवदास का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

- मध्यकालीन रीतिकालीन साहित्यकारों में केशवदास का महत्वपूर्ण स्थान है। आपका जन्म सन् 1955 में ओरछा में हुआ तथा ओरछा नरेश इन्द्रजीतसिंह के दरबार में राजकवि के रुप में प्रतिष्ठित हुए।
- केशवदास द्वारा अपने साहित्य में किया गया अलंकारों, रसों, छंदों का सुन्दर समन्वय आज भी साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है।
- संस्कृत की गम्भीर तथा वक्रतापूर्ण परंपरा शैली के कारण आपकी कविताएँ इतनी दुरुह और क्लिष्ट होती थी। कि आलोचकों द्वारा उन्हें '' कठिन काव्रू का प्रेत'' और हृदयहीन कवि की भी संज्ञा दी है।
- कवि केशवदास की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है—
  - मुक्तक काव्य— रसिक प्रिया, कवि प्रिया।
  - प्रशस्ति काव्य— रतन बावनी, जहाँगीर जस चंद्रिका, वीरसिंह देव चरित।
  - अन्य काव्य— रामचंद्रिका, विज्ञान, गीता, बारहमांसा आदि।

85. बुंदेलखण्डी लोकचित्रकला की विभिन्न शैलियों का वर्णन कीजिये।

- बुंदेलखण्ड में पारंपरिक रुप से विभिन्न पर्व, त्यौहारों तथा मांगलिक अवसरों पर लोकचित्रकला की विभिन्न शैलियाँ प्रचलित है, जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—
- **सुरेती—** यह बुंदेलखंड का पारंपरिक भित्ति चित्र है इसमें मुख्यत: दीपावली के अवसर पर महिलाओं द्वारा लक्ष्मी पूजा के साथ्र सुरेती का रेखांकन किया जाता है।
- **चौक—** यह भी एक प्राचीन चित्रकला है, जिसमें चावल के आटे, हल्दी, कुमकुम आदि से चौक बनाए जाते है।
- **नौरता—** यह नवरात्रि में कुँवारी कन्याओं द्वारा बनाया जाने वाला भित्ति चित्र है।
- गोवर्धन— यह दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा के अवसर पर बनायी जाने वाली आकृति है तथा इसकी पूजा की जाती है।
- **मोरते—** यह विवाह से संबंधित भित्ति चित्र है जो कि दरवाजे के दोनो और दीवार पर बनाए जाते है।

86. हबीब तनवीर का परिचय देते हुए रंगमंच के विकास में उनके योगदान को रेखांकित कीजिए।

- मध्यप्रदेश में रंगकर्म को नयी ऊँचाइयां देने तथा भारतीय नाट्य विकास में हबीब तनवीर का उल्लेखनीय योगदान है।
- रायपुर (छत्तीसगढ़) में 1923 में जन्मे हबीब तनवीर ने देश विदेश से अभिनय के क्षेत्र में विभिन्न प्रशिक्षण व डिग्रिया प्राप्त की तदुपंरात भारतीय रंगमंच के विकास को आगे बढ़ाया।
- 1945 में आप मुम्बई आकाशवाणी के प्रोड्यूसर नियुक्त हुए, 1945 में दिल्ली में हिन्दुस्तान थियेटर की स्थापना की तथा 1964 में दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र के प्रोडयूसर नियुक्त हुए।
- आपने 30 से अधिक नाटकों का निर्देशन किया जिसमें आगरा—बाजार, देख रहे है, नैन, शाजापुर में शांतिबाई, माटी की गाड़ी आदि प्रमुख है।
- नाट्यविद्या में आपके अमूल्य योगदान के कारण आपको पद्मविभूषण, पद्मश्री तथा कालीदास सम्मान से सम्मानित भी किया गया।

87. निमाड़ी लोकचित्रकला पर टिप्पणी लिखिए?

- निमाड़ी लोकचित्रकला अपने चित्रों, अंकन व विशिष्ट विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है।
- इस चित्रकला का सबसे प्रसिद्ध लोकचित्र माण्डने है जिसके अन्तर्गत दीवाली व अन्य उत्सवों पर घर की दीवारों व फर्श पर गोबर एवं पीली मिट्टी से लीपकर सफेद व रंगीन खडिया मिट्टी से कलात्मक माण्डने बनाए जाते है।
- माण्डने के अलावा जिरौती (हरियाली—अमावस्या) नागभित्ती चित्र (नागपंचमी), नवरथ (नवरात्रि) दशहरा चित्रण (विजयादशमी) आदि भी निमाड़ी लोकचित्र कला के अन्य रुप हे।
- इस चित्रकला की एक अन्य विशेषता यह है कि दीवारों पर आँचों बनाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा भी की जाती है।

88. मालवा अंचल में प्रसिद्ध विभिन्न लोकचित्रकलाओं पर प्रकाश डालिए।

मध्यप्रदेश में मालवा क्षेत्र में लोकचित्र के निम्न रुप प्रचलित है—

- **चित्रावण—** इस शैली में घर व अपनों की दीवारों पर पार्वती, गणेश शिवजी के साथ—साथ बैंड—बाजे, पालकी, दूल्हा—दुल्हन आदि के चित्र बनाये जाते है।
- **रंगोली—** त्यौहार अथवा अन्य उत्सवों पर महिलाएँ गुलाल तथा अन्य सूखे से फर्श पर रंगोली बनाती है।
- **माण्डने—** दीपावली या किसी अन्य मांगलिक अवसर पर घर की दीवारों तथा फर्श को गोबर अथवा पीली मिट्टी से लीपकर गेरु या सफेद खड़िया मिट्टी से कलात्मक माण्डने बनाए जाते है।
- **संजा की आकृतियाँ—** श्राद्ध पक्ष में कुंवारी कन्याएँ गोबर, फूल, पत्ती आदि से घर की दीवारों पर संजा की आकृतियाँ बनाती है तथा उसकी पूजा की जाती है।
- **गोंदने—**उपर्युक्त के अलावा मालवा क्षेत्र में शरीर पर विभिन्न आकृति के गोंदने गुदवाने का भी प्रचलन है।

89. मध्यप्रदेश में भगोरिया नृत्य शैली की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

भगोरिया नृत्य शैली की प्रमुख विशेताएँ

- भगोरिया नृत्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में निवास करने वाली भील जनजाति से संबंधित है।
- यह नृत्य मुख्यत: भील जनजाति द्वारा भगोरिया उत्सव के समय किया जाता है, यह सामूहिक नृत्य है जिसमें अनेक वाद्ययंत्रों ढोल, मांदल, शहनाई, बाँसुरी आदि का वादन किया जाता है।
- भगोरिया भील जनजाति का प्रणय पर्व भी है जिसमें भील जनजाति के अविवाहित स्त्री—पुरुष अपने भावी जीवन साथी चुनते है।
- इस अवसर पर ही भील स्त्री—पुरुष सामूहिक नृत्य प्रस्तुत करते है अत: भगोरिया नृत्य जनमानस को स्पंदित करने वाला लोकनृत्य है। जो पश्चिमी मध्यप्रदेश की भीली संस्कृति को अक्षुण्य रखने के साथ—साथ इसकी सामाजिक एकता की वृद्धि में सहायक है।

90. बुंदेलखंड में प्रचलित ''राई लोकनृत्य'' शैली की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

बुंदेली राई लोकनृत्य की विशेषताएँ—

- मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड में राई लोकनृत्य अपनी विशिष्ट पहचान रखता है जो मुख्यत: ग्रामीण अंचलों की एक लोकप्रिय नृत्य शैली है।
- प्रतिष्ठा के सूचक इस लोकनृत्य का आयोजन मुख्यत: विवाह, पुत्रप्राप्ति तथा अन्य उत्सवों के अवसर पर किया जाता है।
- राई नृत्य शैली में श्रृंगार प्रधान गीतों का गायन किया जाता है। साथ ही मध्य में 'स्वांग' का आयोजन भी इसकी एक विशेषता है।
- बुंदेलखंड के लोकगीत में मनोरंजन के एक साधन के रुप में राई नृत्य के केन्द्र में एक नर्तकी मुख्यत: मृदंग वाद्य यंत्र तथा अन्य धुनों पर तीव्र, गतिशील नृत्य प्रस्तुत करती है।
- इस प्रकार राई लोकनृत्य बुंदेली संस्कृति को सुरक्षित रखने तथा एसे एक पीढी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

91. संगीत के क्षेत्र में अलाउद्दीन खाँ के योगदान पर चर्चा कीजिए।

- प्रसिद्ध संगीतकार सरोदवादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का जन्म पूर्वी बंगाल के त्रिपुरा जिले में 1881 ई में हुआ।
- 1911 ई. में मैहर के राजा ब्रजनाथ सिंह के नियंत्रण पर मध्यप्रदेश आये अलाउद्दीन खाँ ने मध्यप्रदेश की संगीत के क्षेत्र में एक अलग पहचान दिलाई।
- आपने मैहर में संगीत 'महाविद्यालय तथा मैहर बैंड की स्थापना की तथा अनेक रागों की रचना की जिनमें मृदन मंजरी, हेमन्त, हेम विहांग तथा माज खभाज अधिक लोकप्रिय रहे।

- अलाउद्दीन खाँ ने सुर सितार, चन्द्रसारंग तथा जलतरंग नामक वाद्ययंत्रों का निर्माण किया।
- संगीत के क्षेत्र में आपके योगदान को देखते हुए आपको देश–प्रदेश के अनेक सम्मान प्राप्त हुए जिनमें पद्भूषण 1958 तथा पद्मविभूषण 1971 प्रमुख है। साथ ही प्रदेश सरकार द्वारा आपकी स्मृति में प्रतिवर्ष मैहर में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह का आयोजन भी किया जाता है।

92. मध्यप्रदेश में लोकगायन के प्रमुख शैलियों का वर्णन कीजिए?

मध्यप्रदेश में लोकगायन की प्रमुख शैलियॉ निम्न है

- **कलंगी तुर्रा**–यह निमाण अंचल की प्रतिस्पर्धात्मक लोकगायन शैली है। इसमें कलगीतुर्रा (शक्ति उपासक) तथा तुर्रा (शिव उपासक) नामक दो अखाड़ा दलों के बीच वाद–विवाह होता है।
- **भरथरी–** यह लोकगायन शैली कवि भर्तृहरि की लोककथाओं पर आधारित है, इसमें भृर्तहरि की रचनाओं कहानियों का लोकभाषाओं में वर्णन किया जाता है।
- **कालबेलिया शैली–** ये मूलत: राजस्थानी शैली है परन्तु मालवा में इस गायन शैली का प्रभाव देखा जाता है इस शैली में चंग नामक वाद्ययंत्र के साथ श्रृंगार प्रधान गीत गाये जाते है।
- **भोपे शैली**–यह मालवा क्षेत्र की लोकगायन शैली है, इस शैली की प्रमुख विशेषता षडवाचना है जिसका अर्थ देवताओं की स्तुति गायन होता है।
- **पंडवानी शैली–** छत्तीसगढ़ से जुड़े प्रदेश के जिलों में यह शैली प्रचलित है। महाभारत की कथा का छत्तीसगढ़ी बोली में प्रस्तुतिकरण पाण्डवानी कहलाता है। इस शैली में संगीत, कथा तथा अभिनय का अद्भुत समन्वय पाया जाता है।

93. संतसिंगाजी का संक्षिप्त परिचय देते हुए, निमाड़ी भाषा साहित्य में उनके योगदान पर चर्चा कीजिए।

- संतसिंगाजी का जन्म सन् 1517 में मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के खजूरी ग्राम में हुआ तथा पिपल्या ग्राम जिला खण्डवा को आपने अपनी कार्यस्थली बनाया।
- निमाड़ी भाषा में लोकसाहित्य के स्तर से ऊपर उठाकर साहित्यिक भाषा बनाने का श्रेय संतकवि सिंगाजी को जाता है।
- सिंगाजी ने निमाड़ी भाषा में लगभग 1100 भजनों की रचना की। ये भजन पूर्णत: आध्यात्मिकता से ओत–प्रोत थे तथा इन्हें सिंगाजी ने लोक साहित्य से जोड़ा।
- सिंगाजी की अधिकांश रचनाएँ मौखिक रुप में ही प्रचलित रही।
- ''अनहन का नाद'' नामक पुस्तक में सिंगाजी की लगभग 800 रचनाएँ संकलित है। तथा उनका एकमात्र प्रमाणिक ग्रंथ ''परचरी'' है।
- सिंगाजी की अन्य रचनाओं में सातवार, बारहमासी, पन्द्रह तिथि तथा कह जनसिंगा आदि प्रमुख है।
- सिंगाजी को मालवा का कबीर कहा जाता है तथा वह निर्गुण धारा के कवियों की श्रेणी में आते है।
- सिंगाजी के भजनों की लोकप्रियता का महत्व इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि स्वंय तुलसीदास ग्राम पिपल्या (खण्डवा) चलकर आये और सिंगाजी से परब्रम्हा तथा जीवन के विविध विषयों पर वार्तालाप किया।

An Institute for MPPSC Examination

94. मध्यप्रदेश के प्रमुख लोकनाटकों का वर्णन कीजिये?

मध्यप्रदेश के प्रमुख लोकनाटको का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:

- **माच:** संपूर्ण नाटक के रुप में मालवा में प्रचलित यह नाटक मध्यप्रदेश का प्रतिनिधि लोकनाटक है। यह मुख्यत: उज्जैन, इंदौर, धार, रतलाम तथा मंदसौर आदि जिलों में प्रचलित है।
- **बुन्देली स्वांग:** बुंदेलखण्ड में प्रचलित यह नाटक सर्वाधिक प्रचलित व लोकप्रिय नाटक है, यह सामूहिक रुप से फसल काटने, शादी व जनमहोत्सवों पर किया जाता है। इसका उद्देश्य हांस्य और व्यंग के माध्यम से शुद्ध मनोरंजन करना है।
- **नौटंकी:** यह मूलत: उत्तरप्रदेश का लोकनाटक है। जो प्रदेश के बुंदेलखण्ड तथा बघेलखण्ड में प्रचलित है। नौटंकी के कथानकों में विशेषकर धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक तथा प्रेमलीलाएँ होती है।
- **गम्मत:** यह निमाड़ी लोकजीवन का सबसे बड़ा मनोरंजन का साधन है। इसका आयोजन नवरात्रि के अवसर पर गाँव में किया जाता है, तथा वाद्ययंत्रों में मृदंग और झाँझ प्रयुक्त होते है।
- **छाहुर:** यह बघेलखण्ड का लोकनाटक है। दीपावली से गोपाटमी तक अहीर, तेली, और कुम्हार जाति के लोग छाहुर नाटक का आयोजन करते है।

95. मध्यप्रदेश कला परिषद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

- मध्यप्रदेश कला परिषद की स्थापना 1952 में मध्यभारत कला परिषद के रुप में हुई।
- 1957 में इसका पुर्नगठन कर इसे मध्यप्रदेश कला परिषद नाम दिया गया, जिसका मुख्यालय भोपाल में है।
- इस परिषद की स्थापना का उद्देश्य प्रदेश में संगीत, नृत्यकला, ललितकला, चित्रकला व रंगमंच को संरक्षण प्रदान कर उसका विस्तार करनाा है।
- इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये यह परिषद समय–समय पर अनेक कार्यक्रमों व समारोहों का आयोजन करती है।
- इसके अतिरिक्त परिषद द्वारा विभिन्न कलाकारों व संस्थाओं को अनुदान भी प्रदान किया जाता है, साथ ही पूर्वाग्रह तथा कलावार्ता नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी कला परिषद द्वारा किया जाता है।

An Institute for MPPSC Examination

96. मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का परिचय देते हुए इसके उद्देश्य बताइये।

- मध्यप्रदेश साहित्य परिषद की स्थापना 1954 में मध्यभारत साहित्य परिषद के रुप में हुई, तथा 1957 में इसका पुर्नगठन कर इसे मध्यप्रदेश साहित्य परिषद नाम दिया गया। जिसका मुख्यालय भोपाल में है।
- इस परिषद का उद्देश्य हिन्दी साहित्य का संरक्षक, संवर्धन व उसके विस्तार के लिए प्रयास करना है।
- परिषद द्वारा समय–समय पर विभिन्न सम्मेलनों, परिचर्चा, वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। साथ ही रचनात्मक तथा आलोचनात्मक साहित्य का प्रकाशन, हिन्दी साहित्य का शोध तथा उसका सम्पादन व प्रकाशन परिषद द्वारा किया जाता है।
- उपर्युक्त के अलावा साहित्य परिषद द्वारा साहित्यकारों व सम्बन्धित संस्थाओं को आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है।

97. कालिदास अकादमी का परिचय देते हुए इसके उद्देश्य बताइये?

- उज्जैन में 1958 से प्रतिवर्ष आयोजित कालिदास समारोह की सफलता को संरक्षित करने के उद्देश्य से कालिदास अकादमी की स्थापना 1977 में की गई। जिसका मुख्यालय उज्जैन में है।
- अकादमी द्वारा कालिदास साहित्य पर शोध, संकलन, संरक्षण, प्रकाशन के साथ–साथ संगीत, नृत्य व रंगमंच को संरक्षण प्रदान किया जाता है।

- अकादमी द्वारा साहित्य से जुड़े कलाकारों को प्रोत्साहित करने हेतु सम्मान व आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।
- इसके द्वारा पूर्वा नामक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है।

98. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय प्रदेश के साथ–साथ देश का भी पहला मानव संग्रहालय है, जिसकी स्थापना सन् 1985 में भोपाल के श्यामला हिल्स पहाड़ियों पर की गई।
- यह संग्रहालय भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन है, जिसकी स्थापना का उद्देश्य प्राचीन काल से वर्तमान तक मानव की विकास यात्रा को प्रदर्शित करना है।
- इस संग्रहालय में प्रदर्शनी के रुप में मानव के विकास उसके स्थानांतरण, प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक काल में सामाजिक व सांस्कृतिक उपलब्धियों व विषयों को शामिल किया गया है।
- संग्रहालय में 25 एकड़ में फैली स्थायी प्रदर्शनी ट्राइबल हैरिटेज और शैलचित्र धरोहर इस संग्रहालय के विशेष आर्कषण है, साथ ही संग्रहालय में लगभग 2000 नमूनों का संग्रह है, जो जनजातियों व ग्रामीण आबादी की भौतिक संस्कृति को प्रदर्शित करती है।

99. मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी पर टिप्पणी लिखिए।

- मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी का गठन सन 1987 में किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य तुलसी साहित्य का अन्वेषण, प्रचार–प्रसार और संरक्षण प्रदान करना है।
- इस अकादमी द्वारा तुलसी साहित्य के विद्वानों का सम्मेलन, सम्मान, परिचर्चा तथा प्रोत्साहन दिया जाता है।
- तुलसी अकादमी अंतराष्ट्रीय तुलसी विद्यापीठ के रूप में भी विकसित हुआ है। जहाँ अनेक शोधार्थियों को गुरूकुल पद्धति से शिक्षा प्रदान की जाती है।
- तुलसी अकादमी द्वारा अपने कार्यक्रमों एवं कार्यो के प्रचार–प्रसा हेतु समाधान नामक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है।

100. मध्यप्रदेश में आयोजित होने वाले प्रमुख सांस्कृतिक समारोह की जानकारी दीजिए।

प्रदेश में आयोजित होने वाले प्रमुख सांस्कृतिक समारोह इस प्रकार है–

- **कालीदास समारोह–** यह समारोह 1958 से प्रतिवर्ष उज्जैन में कालीदास की स्मृति में आयोजित किया जाता है। इस समारोह में विभिन्न कलाओं, रंग मंच, नाट्य प्रदर्शन तथा वाद–विवाद का आयोजन होता है।
- **मध्यप्रदेश समारोह–** मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत की झलकियां प्रस्तुत करने वाले इस समारोह का आयोजन दिल्ली में किया जाता है।
- **खजुराहो नृत्य समारोह–** यह समारोह 1976 से प्रारम्भ हुआ तथा प्रतिवर्ष खजुराहो में आयोजित किया जाता है। यह प्रदेश ही नहीं बल्कि भारत का भी सबसे बड़ा नृत्य समारोह है जिसमें भारतीय शास्त्रीय नृत्य से जुड़े कलाकार शामिल होते है।
- **उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत समारोह–** यह समारोह 1974 से प्रतिवर्ष मैहर में आयोजित किया जाता है। जिसमें शास्त्रीय संगीत की रंगारंग प्रस्तुति होती है।
- **मालवा उत्सव–** मध्यप्रदेश शासन के संस्कृत विभाग द्वारा 1991 से प्रतिवर्ष इंदौर, उज्जैन एवं मांडू में यह समारोह आयोजित किया जाता है।

उपर्युक्त के अलावा प्रदेश में तानसेन समारोह, ध्रुपद समारोह, ओरछा उत्सव तथा सुभद्रा कुमारी चौहान समारोह का आयोजन भी किया जाता है।

101. मध्य प्रदेश में आयोजित होने वाले कालीदास समारोह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

- संस्कृत साहित्य के महान नाटककार एवं कवि कालिदास की स्मृति में कालिदास समारोह का आयोजन 1958 से प्रतिवर्ष उज्जैन में आयोजित किया जाता है।
- 7 दिन तक चलने वाले इस समारोह में संस्कृत साहित्य से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते है साथ ही इस समारोह में विभिन्न सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, वाद–विवाद तथा कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

- इस समारोह का आयोजन कालिदास अकादमी द्वारा किया जाता है जिसमें देश–प्रदेश के विभिन्न साहित्यकार, कवि तथा विद्वान भाग लेते है।
- विभिन्न साहित्यकारो को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वर्ष 1980 से इस समारोह में कालिदास सम्मान भी प्रदान किया जाता है।

102. मध्य प्रदेश में आयोजित होने वाले विभिन्न मेलों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

मध्य प्रदेश में आयोजित होने वाले विभिन्न मेलों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

- **सिंहस्थ मेला–** यह 12 वर्ष के अंतराल में उज्जैन नगर में शिप्रा नदी के किनारे आयोजित किया जाता है। इसमें विभिन्न साधु–सन्त तथा भक्त लोग भाग लेते है।
- **नागा जी का मेला–** संत नागाजी की स्मृति में यह मेला प्रतिवर्ष मुरैना जिले के पोरसा में आयोजित होता है।
- **तेजाजी का मेला–** संत तेजाजी की जयंती भाद्रपद दशमी पर प्रतिवर्ष यह मेला गुना जिले में आयोजित किया जाता है। इसका आयोजन पिछले 100 वर्षो से किया जा रहा है।
- **योगेशवरी देवी का मेला–** यह मेला अशोकनगर जिले के चन्देरी नामक स्थान पर आयोजित किया जाता है।
- **महामत्युंजय का मेला–** रीवा जिले में महामत्युंजल के मंदिर पर बसंत पंचमी तथा शिवरात्रि पर यह मेला आयोजित होता है। यह बघेलखंड का एक प्रमुख धार्मिक मेला है।
- **काना बाबा का मेला–** लगभग 250 वर्षो से पुराने इस मेले का आयोजन कानाबाबा की समाधि होशंगाबाद जिले के सोढलपुर नामक गाँव में किया जाता है।

उपर्युक्त के अलावा मध्यप्रदेश में पीरबुधन का मेला (शिवपुरी), सिंगाजी का मेला (पश्चिमी निमाड़) जल विहार मेला (छतरपुर) तथा बड़े बाबा का मेला (दमोह) का आयोजन भी किया जाता है।

103. मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रदान किये जाने वाले विभिन्न सम्मानों/पुरस्कारो का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रदान किये जाने वाले विभिन्न सम्मान/पुरस्कार निम्न है–

- **कालिदास सम्मान–** मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा यह सम्मान वर्ष 1980 से प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। प्रारम्भ में यह सिर्फ शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में दिया जाता था परन्तु 1985–86 से यह 4 क्षेत्रों शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, रूपंकर कला, रंगमंच में प्रदान किया जाता है।
- **तानसेन सम्मान–** वर्ष 1980 से यह सम्मान प्रतिवर्ष हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में दिया जाता है जिसके अंतर्गत 2 लाख रूपये नकद सम्मान के साथ–साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।
- **तुलसी सम्मान–** प्रदेश शासन द्वारा वर्ष 1983–84 में स्थापित यह राष्ट्रीय सम्मान आदिवासी, लोक एवं पारंपरिक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट सृजनात्मकता एवं श्रेष्ठ उपलब्धि के लिए दिया जाता है।
- **कबीर सम्मान–** मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा 1986–87 में स्थापित यह सम्मान भारतीय भाषा की कविता के क्षेत्र में उत्कृष्ट रचना हेतु प्रदान किया जाता है। जिसके अंतर्गत 3 लाख रूपये की राशि तथा प्रशस्ति पत्र सम्मानपूर्वक दिया जाता है।
- **लता मंगेशकर सम्मान–** 1984 में स्थापित यह सम्मान राष्ट्रीय स्तर पर सुगम संगीत के क्षेत्र में प्रदान किया जाता है।

उपर्युक्त सम्मानों के अलावा मध्य प्रदेश शासन द्वारा किशोर कुमार सम्मान (1997), महात्मा गांधी राष्ट्रीय सम्मान (1995), इकबाल सम्मान (1987) तथा राज्य स्तरीय शिखर सम्मान (1981) भी प्रदान किये जाते हैं।

An Institute for MPPSC Examination

104. मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रदान किये जाने वाले कालिदास सम्मान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।

- मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा कालिदास सम्मान की स्थापना वर्ष 1980 में की गई यह विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में प्रदान किया जाने वाला भारत का सबसे बड़ा सम्मान है।
- इस सम्मान का मुख्य उद्देश्य सृजनात्मक कलाओं का संरक्षण, संवर्धन व प्रोत्साहन करना है।
- अपने प्रारम्भिक वर्षो में शासन द्वारा यह सम्मान केवल शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में प्रदान किया जाता था परन्तु वर्ष 1985–86 से यह सम्मान निम्न 4 क्षेत्रों में दिया जा रहा है– शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, रूपांकर कला तथा रंगमंच।
- इस सम्मान के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र के लिये 2 लाख रूपये तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जाने की व्यवस्था है।
- यह सम्मान उज्जैन में आयोजित होने वाले कालिदास समारोह में प्रदान किया जाता है।

105. मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलो का उल्लेख कीजिए।

प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नलिखित है–

- **खजुराहो–**छतरपुर जिले में स्थित प्रसिद्ध पर्यटक स्थल जहां हिन्दू,जैन व बौद्ध धर्म से सम्बंधित अनेक मंदिर है।
- **सांची–** रायसेन जिले में स्थित विश्व विख्यात प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ स्थल जहां स्तूप, चैत्य और विहार आदि बौद्ध कला के उत्कृष्ट नमूने स्थित है।
- **चित्रकूट–** ब्रह्मा, विष्णु और महेश के बाल अवतार तथा भगवान राम के वनवास स्थल से जुड़े इस हिन्दु पर्यटन स्थल का मध्य प्रदेश में विशेष महत्व है।
- **अमरकंटक–** मैकाल पहाड़ियों में स्थित अमरकंटक प्रदेश का प्रसिद्ध धार्मिक व प्राकृतिक पर्यटन स्थल है यहां से नर्मदा और सोन नदियों का उद्गम होता है।
- **पचमढ़ी–** यह होशंगाबाद जिले में सतपुड़ा के पठार में स्थित प्रमुख प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। जहाँ अनेक जलाशय व जल प्रपात व धूपगढ़ की प्रसिद्ध चोटी स्थित है।
- **मांडू–** यह हिन्दु–मुस्लिम शासको से संबंधित एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है। जहां जहाज महल, हिंडोला महल, रानी रूपमती महल, नीलकंठ महल जैसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल स्थित है।

उपर्युक्त पर्यटन स्थलों के अतिरिक्त मध्य प्रदेश में उज्जैन, बांधवगढ़, भेड़ाघाट, उदयगिरी ओंकारेश्वर तथा भीमबैठका जैसे अनेक अन्य पर्यटक स्थल भी मौजूद है जिन्होंने मध्य प्रदेश को देश–विदेश में एक विशिष्ट पहचान दिलाई है।

106. मध्य प्रदेश में पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध विभिन्न गुफाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

मध्य प्रदेश में पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध प्रमुख गुफाएं निम्न है–

- **भर्तृहरि की गुफाएं–** उज्जैन से लगभग १२ किलोमीटर दूर भर्तृहरि की गुफाएं स्थित है जिनका निर्माण परमार वंश के राजाओ द्वारा ११वीं शताब्दी में करवाया गया था। यहां गुफाओं की कुल संख्या 9 है जिनमें ४ खण्डित हो चुकी है जबकि ५ गुफाएं शेष है इन गुफाओ से प्राप्त चित्रो व अवशेषों से प्राचीनकाल में उज्जैन नगर की समृद्धि व संपन्नता का ज्ञान प्राप्त होता है।
- **उदयगिरी की गुफाएं–** विदिशा जिले में चौथी और पांचवी शताब्दी में निर्मित उदयगिरी की गुफाएं गुप्तकाल की उत्कृष्ट निर्माण कला का सुन्दर उदाहरण है। इन गुफाओं में गुफा नंबर 1 व 20 जैन धर्म से संबंधित है जबकि गुफा नंबर ५ में वराह

की विशाल प्रतिमा है जो पुराणों में वर्णित पृथ्वी के उद्धार की कहानी पर आधारित है।

- **बाघ की गुफाएं—** धार जिले में बाघ नामक स्थान पर नर्मदा की सहायक नदी वाघनी के तट पर यह गुफाएं स्थित है जो अजन्ता की गुफाओं के समान कलापूर्ण एवं भित्ति चित्रों से युक्त है। इन गुफाओं में जीवन की विभिन्न दशाओं का चित्रण मिलता है।

107. मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों पर चर्चा कीजिए।

मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल—

- **उज्जैन—** प्राचीनकाल में अवन्ती के नाम से विख्यात उज्जैन शिप्रा नदी के तट पर स्थित प्राचीन काल से ही प्रमुख धार्मिक नगर रहा है जहां महाकालेश्वर का प्रसिद्ध मंदिर है। उज्जैन में 12 वर्ष पश्चात् कुंभ मेले का आयोजन होता है साथ ही महाकालेश्वर मंदिर देश के 12 ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है।
- **चित्रकूट—** ब्रह्मा, विष्णु व महेश के बाल अवतार तथा भगवान राम के वनवास से जुड़ा चित्रकूट प्रदेश का प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटन स्थल है। यह मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित है।
- **सांची—** विश्व विरासत स्थल की सूची में शामिल सांची विश्व प्रसिद्ध बौद्ध धर्मस्थल है जहां स्थित प्रसिद्ध स्तूपों का निर्माण सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में कराया था।
- **अमरकंटक—** प्रदेश के अनूपपुर जिले में मैकाल की पहाड़ियों में स्थित अमरकंटक प्रदेश के पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है जहां से पवित्र नर्मदा, सोन तथा जोहिला नदी का उद्गम होता है। अमरकंटक में अनेक प्राचीन मंदिर स्थित है जिनका निर्माण 10वीं व 11वीं शताब्दी में कल्चुरी वंश के शासकों ने करवाया था।
- **ओंकारेश्वर—** महादेव के प्रसिद्ध मंदिर के रूप में विख्यात ओकारेश्वर खंडवा जिले में स्थित महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थल है। महादेव मंदिर देश के सुप्रसिद्ध 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। महादेव के अतिरिक्त यहां सिद्धनाथ मंदिर, गौरी सोमनाथ मंदिर, शंकराचार्य की गुफाएं आदि भी दर्शनीय स्थल है।
- **बावनगजा—** भगवान आदिनाथ की 72 फीट ऊँची प्रतिमा के कारण प्रसिद्ध बावनगजा एक प्रमुख जैन तीर्थ स्थल है। बड़वानी जिले में स्थित इस स्थल पर श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) की तर्ज पर प्रति 12 वर्ष बाद महा मस्तकाभिषेक का आयोजन किया जाता है।

मध्यप्रदेश म विश्व धरोहर स्थल एवं पयटन

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

108. मध्यप्रदेश के धरोहर स्थल

- खजुराहो—छतरपुर जिले में स्थित, 1986 में यूनेस्को सूची में शामिल।
- साँची—रायसेन जिले में स्थित, 1989 में यूनेस्को सूची में शामिल।
- भीमबेटिका—रायसेन जिले में स्थित, 2003 में यूनेस्को सूची में शामिल।

109. भेड़ाघाट का महत्व

- जबलपुर के समीप प्राकृतिक रमणीय पर्यटक स्थल
- धुँआधार जलप्रपात तथा चौसठ योगिनी मंदिर प्रसिद्ध स्थल
- नर्मदा के तटो पर संगमरमर की सौ फुट ऊँची चट्टाने भेड़ाघाट की विशेषता है।

110. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

- देश का प्रथम मानव संग्रहालय जिसकी स्थापना सन् 1985 में श्यामला हिल्स भोपाल में की गई।
- भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन।
- ट्राइबल हैरिटेज प्रदर्शनी तथा शैलचित्र धरोहर संग्रहालय के विशेष आकर्षण।

111. मध्यप्रदेश उत्सव

- वर्ष 1981 से भारत की राजधानी दिल्ली में किया जाने वाला उत्सव।
- उद्देश्य—मध्यप्रदेश की संस्कृति को संरक्षित रखना तथा उससे अन्य राज्यों के लोगों को परिचित करना।
- समारोह में विशेष झांकिया, गायन, नृत्य व चित्रकारी का प्रदर्शन किया जाता है।

112. मालवा उत्सव

- मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा वर्ष 1991 से किया जाने वाला आयोजन।
- यह गणेश चतुर्थी से त्रयोदशी तक इंदौर, उज्जैन व माण्डू में एक साथ आयोजित किया जाता है।
- **उद्देश्य:** मालवा संस्कृति का संरक्षण व प्रचार—प्रसार।

113. मध्यप्रदेश में स्थित प्रमुख जैनतीर्थ स्थल

- कुंडलपुर (दमोह)
- मुक्तागिरी (बैतूल)
- कामदगिरी (चित्रकूट)

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

114. मध्य प्रदेश के विश्व धरोहर स्थलों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

मध्य प्रदेश पुरातात्विक दृष्टि से एक समृद्ध प्रदेश है यहां पाये जाने वाले विश्व धरोहर स्थल निम्न है—

- भीमबैठका— रायसेन जिले में स्थित इस स्थल से उच्च पुरापाषाणकालीन गुफाएं व शैल चित्र प्राप्त हुए है जिनमें आदिमानव ने अपनी कलात्मक अभिरूचियो का प्रदर्शन किया है इसे वर्ष 2003 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।
- खजुराहो— छतरपुर जिले में विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर स्थित है जो हिन्दु स्थापत्य एवं शिल्प कला के उत्कृष्ट नमूने है इन मंदिरों का निर्माण चन्देल राजाओं ने 950-1050 ईस्वी के मध्य किया तथा इन्हें वर्ष 1986 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर में शामिल किया गया।
- सांची— सांची को रायसेन जिले में स्थित विश्व विख्यात बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में जाना जाता है इन स्तूपों का निर्माण सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ई. पूर्व में कराया था तथा वर्ष 1989 में यूनेस्को ने सांची को विश्व धरोहर में शामिल किया।

115. विश्व धरोहर स्थल के रूप में सांची का महत्व स्पष्ट कीजिए।

- सांची मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में जाना जाता है,
- यहां पर 3 बौद्ध स्तूप है जिनका निर्माण सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के पश्चात् तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व कराया था। यह स्तूप बौद्ध धर्म के अनुयायियो के आर्कषण का केन्द्र है।
- बौद्ध स्तूप के अलावा सांची में बौद्धकालीन शिल्प कला के अनेक नमूने विद्यमान है यहां के स्तूप तथा बिहार बौद्धकला के उत्कृष्ट नमूने है।
- अर्द्धवृत्ताकार आकृति में निर्मित बौद्ध स्तूपों की खोज जनरल टेलर द्वारा वर्ष 1818 में की गई थी। यह स्तूप लाल बलुआ पत्थरो से निर्मित है। इन स्तूपों में महात्मा बुद्ध, बौद्ध धर्म के प्रचारक तथा बुद्ध के २ शिष्यों महामोद्ग्लायन व सारिपुत्र के अस्थि अवशेष सुरक्षित है।
- सांची के उपर्युक्त धार्मिक व स्थापत्य महत्व को देखते हुए वर्ष 1989 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया।

116. विश्व धरोहर स्थल के रूप में भीमबेटका का महत्व स्पष्ट कीजिए।

- मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भीमबेटका नामक स्थल पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है यह विश्व का सबसे बड़ा गुफा समूह है जहां गुफाओं की संख्या लगभग 500 है।
- इन गुफाओं में आदिमानव द्वारा निर्मित उच्च पुरापाषाण कालीन विभिन्न शैलचित्र, शैलाश्रय व अनेक कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं जिनमें आदिमानव ने अपनी प्राचीन अभिरूचियों व अभिव्यक्तियों का परिचय दिया है।
- भीमबैठका की गुफाओं में प्राप्त चित्रों में प्राचीनकाल के पशु–पक्षियों के शिकार, सामाजिक जीवन व मनोरंजन के अनेक चित्र प्राप्त हुए है तथा शैलचित्र निर्माण में लाल तथा सफेद रंगों का अधिक प्रयोग किया गया है।
- भीमबैठका की गुफाओं की खोज श्री विष्णुधर वाकणकर द्वारा 1957–58 में की गई थी तथा इसके ऐतिहासिक महत्वों को देखते हुए यूनेस्को ने वर्ष 2003 में इसे विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया।

117. विश्व धरोहर स्थल के रूप में खजुराहो का महत्व स्पष्ट कीजिए।

- मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो अपने विश्व विख्यात मंदिरो के लिये प्रसिद्ध है जो हिन्दू स्थापत्य एवं शिल्पकला के उत्कृष्ट नमूने के रूप में जानेजाते है।
- खजुराहो के इन प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण चन्देल राजाओं ने वर्ष 950 से 1050 ईस्वी के मध्य कराया था जिनमें प्रमुख है 64 योगिनी मंदिर, कंदरिया महादेव, चित्रकूट, मातंगेश्वर, लक्ष्मण मंदिर तथा आदिनाथ व पार्श्वनाथ का जैन मंदिर आदि।
- खजुराहो के मंदिरों में मानवीय अर्न्तद्वंद प्राकृतिक भावना के अनुरूप है जिनके चित्रों में सजीव मैथुन, काम व रति क्रीड़ाएँ, सांसारिक निष्कपटता तथा स्वच्छन्द प्रेम परिलक्षित होता है।
- अपनी कलात्मक उत्कृष्टता के कारण खजुराहो न सिर्फ एक प्रसिद्ध पर्यटन केन्द्र के रूप में विख्यात है बल्कि इस स्थल को वर्ष 1986 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर की सूची में भी शामिल किया गया।

118. मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलो का उल्लेख कीजिए।

मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवेश ने उसे पर्यटन के रूप में विशेष पहचान प्रदान की है। अपने विविधतापूर्ण स्थलों के कारण मध्य प्रदेश राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटको को आर्कषित करता है। प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नलिखित है–

- खजुराहो–छतरपुर जिले में स्थित प्रसिद्ध पर्यटक स्थल जहां हिन्दू,जैन व बौद्ध धर्म से सम्बंधित अनेक मंदिर है।
- सांची– रायसेन जिले में स्थित विश्व विख्यात प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ स्थल जहां स्तूप, चैत्य और विहार आदि बौद्ध कला के उत्कृष्ट नमूने स्थित है।
- चित्रकूट– ब्रह्मा, विष्णु और महेश के बाल अवतार तथा भगवान राम के वनवास स्थल से जुड़े इस हिन्दु पर्यटन स्थल का मध्य प्रदेश में विशेष महत्व है।

- अमरकंटक— मैकाल पहाड़ियों में स्थित अमरकंटक प्रदेश का प्रसिद्ध धार्मिक व प्राकृतिक पर्यटन स्थल है यहां से नर्मदा और सोन नदियों का उद्गम होता है।
- पचमढ़ी— यह होशंगाबाद जिले में सतपुड़ा के पठार में स्थित प्रमुख प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। जहाँ अनेक जलाशय व जल प्रपात व धूपगढ़ की प्रसिद्ध चोटी स्थित है।
- मांडू— यह हिन्दु—मुस्लिम शासको से संबंधित एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है। जहां जहाज महल, हिंडोला महल, रानी रूपमती महल, नीलकंठ महल जैसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल स्थित है।

उपर्युक्त पर्यटन स्थलों के अतिरिक्त मध्य प्रदेश में उज्जैन, बांधवगढ़, भेड़ाघाट, उदयगिरी ओंकारेश्वर तथा भीमबैठका जैसे अनेक अन्य पर्यटक स्थल भी मौजूद है जिन्होंने मध्य प्रदेश को देश—विदेश में एक विशिष्ट पहचान दिलाई है।

119. मध्य प्रदेश में पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध विभिन्न गुफाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

मध्य प्रदेश में पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध प्रमुख गुफाएं निम्न है—

- भर्तृहरि की गुफाएं— उज्जैन से लगभग १२ किलोमीटर दूर भर्तृहरि की गुफाएं स्थित है जिनका निर्माण परमार वंश के राजाओ द्वारा ११वीं शताब्दी में करवाया गया था। यहां गुफाओं की कुल संख्या 9 है जिनमें ४ खण्डित हो चुकी है जबकि ५ गुफाएं शेष है इन गुफाओ से प्राप्त चित्रो व अवशेषों से प्राचीनकाल में उज्जैन नगर की समृद्धि व संपन्नता का ज्ञान प्राप्त होता है।
- उदयगिरी की गुफाएं— विदिशा जिले में चौथी और पांचवी शताब्दी में निर्मित उदयगिरी की गुफाएं गुप्तकाल की उत्कृष्ट निर्माण कला का सुन्दर उदाहरण है। इन गुफाओं में गुफा नंबर 1 व 20 जैन धर्म से संबंधित है जबकि गुफा नंबर ५ में वराह की विशाल प्रतिमा है जो पुराणों में वर्णित पृथ्वी के उद्धार की कहानी पर आधारित है।
- बाघ की गुफाएं— धार जिले में बाघ नामक स्थान पर नर्मदा की सहायक नदी वाघनी के तट पर यह गुफाएं स्थित है जो अजन्ता की गुफाओं के समान कलापूर्ण एवं भित्ति चित्रों से युक्त है। इन गुफाओं में जीवन की विभिन्न दशाओं का चित्रण मिलता है।

120. मध्य प्रदेश पर्यटन नीति 2016 के मुख्य प्रावधानो का उल्लेख कीजिए।

- 16 सितम्बर, 2016 को राज्य सरकार ने 'मध्य प्रदेश पर्यटन नीति, 2016' का अनुमोदन किया। यह लागू होने की तिथि से 5 वर्ष के लिए प्रभावशील रहेगी। इस नीति की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

An Institute for MPPSC Examination

1. पर्यटन में प्रदेश को अग्रणी बनाने, संतुलित, समेकित पर्यटन द्वारा सामाजिक आर्थिक विकास के सभी विभागों के समन्वित प्रयासों के लिए 'पर्यटन कैबिनेट' का गठन किया गया है।
2. प्रदेश में पर्यटन की बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाने के लिए राज्य के बजट के साथ ही केन्द्र सरकार की योजनाओं, निजी निवेशकों के साथ पी. पी. टी. मोड में कार्य करने की संभावनाओं की तलाश।
3. पर्यटक गंतव्यों के आस—पास पर्यटक आकर्षण के अन्य केन्द्रों का विकास किया जाएगा।
4. टूरिस्ट सर्किट को जोड़ने के लिए परिवहन विभाग के साथ समन्वय कर लग्जरी बसों के संचालन के प्रयास।

121. म.प्र. में पर्यटन के विकास हेतु किये गये प्रयासो का उल्लेख कीजिए।

- चूंकि पर्यटन से संबंधित क्षेत्र का आर्थिक विकास होता है इसलिए पर्यटन स्थलों का संरक्षण एवं वहाँ पर पर्यटन सुविधाओं का विकास सरकार एवं प्रशासन का प्रमुख कर्तव्य है।
- 1978 मध्यप्रदेश में पर्यटन के विकास के लिए म.प्र. राज्य पर्यटन विकास निगम की स्थापना हुई।
- 22 फरवरी 2017 मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड का गठन हुआ।
- 28 फरवरी 2017 म.प्र. में जल पर्यटन नीति लागू हुई जिसका मुख्य उद्देश्य जल पर्यटन की गतिविधियों को संचालित और सवर्द्धित करना।

- प्रथम पर्यटन नीति 5 सितंबर 2012 को जारी की गई जिसके तहत पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया तथा हेरिटेज होटल के लिए अनुदान की व्यवस्था की गई।
- प्रथम संशोधित पर्यटन नीति 2014 को जारी की गई जिसके तहत पर्यटन निवेश हेतु एकल खिड़की प्रणाली तथा पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहन दिया गया।
- नवीन पर्यटन नीति 16 सितम्बर 2016 को जारी की गई जिसके तहत पर्यटन कैबिनेट का गठन हुआ तथा पर्यटन विकास हेतु राज्य बजट में वृद्धि की बात की गई।

122. मध्य प्रदेश फिल्म पर्यटन नीति 2020 के प्रमुख बिन्दुओं पर चर्चा कीजिए।

तात्कालिक मुख्यमंत्री कमलनाथ की अध्यक्षता में मंत्रालय में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में मध्य प्रदेश फिल्म पर्यटन नीति–2020 का अनुमोदन किया गया। नीति के मुख्य बिन्दु इस प्रकार है–

- मध्य प्रदेश को फिल्म निर्माताओं के लिए प्रमुख आकर्षण बनाना एवं निजी निवेश को प्रात्साहित करना।
- राज्य में फिल्म शूटिंग के माध्यम से कौशल विकास और रोजगार सृजन।
- फीचर फिल्म, टी.वी. सीरियल/शो/वेब सीरिज/शो/डाक्यूमेंटी की शूटिंग के लिये वित्तीय अनुदान के माध्यम से मध्यप्रदेश में शूटिंग को प्रोत्साहन।
- मध्यप्रदेश के स्थानों के प्रचार–प्रसार के लिये अधिक स्क्रीन टाईम के लिये विशेष अनुदान।
- अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म निर्माताओं और दक्षिण भारतीय फिल्म निर्माताओं के लिये विशेष वित्तीय प्रोत्साहन।
- स्थायी प्रकृति के बुनियादी ढांचे के निर्माण पर वित्तीय प्रोत्साहन/अनुदान/भूमि आवंटन।
- फिल्म निर्माताओं के लिये समय सीमा में अनुमति की सुविधा और सहायता देना।
- रियायती दरों पर एमपीएसटीडीसी की ईकाइयों में सेवाएँ उपलब्ध कराना।
- फिल्म नीति क्रियान्वयन के लिये विशेष समर्पित फिल्म फेसिलिटेशन सेल का निर्माण।
- सिंगल विन्डो सिस्टम के माध्यम से फिल्मांकन अनुमति के लिये संबंधित विभागों से आवश्यक समन्वय स्थापित करना।
- फिल्म सिटी, फिल्म स्टूडियो, कौशल विकास केन्द्र आदि के लिये राज्य में फिल्म उद्योग को प्रोत्साहन।
- फिल्म से संबंधित विभिन्न आयोजनों में सहभागिता की जाकर प्रदेश का प्रचार–प्रसार करना।
- बुनियादी ढांचे यथा–आवास एवं परिवहन आदि का विकास।